माध्यमिक स्तर के विद्यालयी शिक्षकों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं

के शिक्षा अधिस्नातक (एम.एड.)

उपाधि की आशिंक

पुर्ति हेतु प्रस्तुत

लघु शोध प्रबंध

निर्देशक

प्रो. बनवारी लाल जैन

(विभागाध्यक्ष)

शोधकर्त्री

अनिता कुमारी

एम.एड. छात्रा

शिक्षा विभाग

जैन विश्व भारती संस्थान

लाडनूं – 341306 (राजस्थान)

घोषणा पत्र

मैं **अनिता कुमारी** शोधकर्त्री जैन विश्वविद्यालय लाडनूं यह द्योषणा करती हूँ कि मैंने अपना लघु शोध प्रबंध का कार्य जिसका शीर्षक **"माध्यमिक स्तर के विद्यालयी शिक्षकों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन" प्रो. बनवारी लाल जैन, (विभागाध्यक्ष शिक्षा विभाग)** के कुशल एवं प्रेरणास्पद मार्गदर्शन में पूर्ण किया।

दिनांक– **शोधकर्त्री**

अनिता कुमारी

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता हैं कि **अनिता कुमारी एम.एड़ (छात्रा)** द्वारा **"माध्यमिक स्तर के विद्यालयी शिक्षकों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन"** विषय पर लघु शोध प्रबंध का कार्य मेरे निर्देशन में सम्पन्न किया गया है।

निर्देशक

प्रो. बनवारी लाल जैन

(विभागध्यक्ष)

(जैन विश्वभारती संस्थान लाडनूं)

आभार प्रसून

सर्वप्रथम मैं मां सरस्वती को नमन करती हूँ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध **"माध्यमिक स्तर के विद्यालयी शिक्षकों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन"** को विद्वतजनों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अति प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। यह लघु शोध प्रबन्ध मेरा प्रथम प्रसास है, जिसे सौभाग्यवश इस प्रतिष्ठित महाविद्यालय के विद्वतजनों को आशीष व संरक्षण प्राप्त हुआ है। शोधार्थी ने एम.एड. के आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत किया है।

अतः उनके प्रति आभार प्रदर्शन करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ। आभार प्रदशर्न करते हुए मैं अपनी भावनाओं को शब्दों में व्यक्त करने में असमर्थ हूँ। फिर भी मैंने आभार प्रदर्शन करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ। आभार प्रदर्शन करते हुए मैं अपनी भावनाओं को शब्दों में व्यक्त करने में असमर्थ हूँ।

"यदि सारा आकाश कागज बना दिया जाये, सारे पेड़ कलम बना दिए जाये और संसार के सारे लोग बैठ जाये तो भी वे उस ज्ञान को नहीं लिख पायेगें जो मेरे शिक्षक ने मुझे दिया हैं।"

फिर भी मैंने आभार व्यक्त करने का प्रयास किया है। इस शोध को प्रभावी और सफलतापूर्वक पूर्ण कराने का श्रेय मेरे निर्देशक **(विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग) प्रो. बनवारी लाल जैन** को है, जिनका विद्वतापूर्ण मार्गदर्शन एवं सूक्ष्म पर्यवेक्षण में यह शोध प्रबन्ध पूर्ण हुआ है, इसके लिए मैं ऋणी रहूँगी। इन्होंने अपने व्यक्त जीवन के अमूल्य क्षणों में से इस कार्य को सम्पूर्ण कराने हेतु उन्होंने जिस निष्ठा के साथ

सहयोग किया है वह अविस्मरणीय है। मैं नतमस्तक हो इन्हें अपना हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ।

इस शोध प्रबन्ध को समय पर पूर्ण करने का श्रेय, मेरे निर्देशक **(विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग) प्रो. बनवारी लाल जैन, (सहायक आचार्य) गिरीराज भोजक तथा समस्त गुरूजन डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. भावाग्राही प्रधान, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. सरोज राय, डॉ. आभा सिंह, डॉ. अमिता जैन, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, पुस्तकालयाध्यक्ष महिमा जैन (शिक्षा विभाग)** जैन विश्व भारती शिक्षण संस्थान लाडनू, जिला नागौर को जाता है, जिनके विद्वतापूर्ण मार्गदर्शन, स्नहे एवं सूक्ष्म पर्यवेक्षण में यह शोध प्रबन्ध पूर्ण हुआ है। इसके लिए मैं उनकी ऋणी रहूँगी। वस्तुतः शोध प्रबन्ध उनके निरन्तर पथ–प्रदर्शन एवं सक्रिय सहयोग का ही परिणाम है। मैं नतमस्तक हो उनका हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ। प्रेरणापूर्ण प्रोत्साहन ने लघु शोध प्रबन्ध कार्य को सरल एवं सहज बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मैं उन लेखकों, विचारकों का भी हदय से कृतज्ञ हूँ जिनके समावेश इस लघु शोध कार्य में स्थान–स्थान पर किया गया है।

मैं अपने पति श्री नरेश चौधरी, पुत्री अंजली चौधरी एवं पुत्र पुनीत चौघरी, पिता श्री रामप्रताप जी, माता–श्रीमती मोहिनी देवी, ससुर–श्री रामनिवास जी चौधरी, देवर–देवरानी सुदेश चौधरी एवं निलम चौधरी साथ ही साथ अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य का आभार प्रकट करती हूँ, क्योंकि इनके सहयोग से ही मेरा यह शोध कार्य पूर्ण हो पाया है। साथ ही मैं अपने एम.एड. के सहपाठियों सरिता यादव, मंजु यादव, सपनेश, सोनिका मिश्रा एवं कवित एवं समस्त सहपाठियों का हृदय से आभार प्रकट करती हूँ।

अंत में मैं **एन.के. फोटो कॉपियर्स** के **श्री पवन कुमार सैन** की भी आभारी हूँ जिनके अथक परिश्रम, अनुभव एवं सहयोग से ही यह लघु शोध प्रबंध कलात्मक रूप से पूर्ण किया जाना संभव हो सका है। यदि इस लघु शोध प्रबंध की प्रस्तुति आकर्षक, सुन्दर एवं स्पष्ट एवं समय से देय बन पडी है तो इनका श्रेय निः संदेह एन.के. फोटो कॉपियर्स को दिया जाना चाहिए।

अंत में परम पिता परमात्मा को शत्–शत् नमन करती हूँ जिन्होंने मुझे इस योग्य बनाया कि मैं प्रस्तुत शोध का अध्ययन कर सकी।

प्रस्तुतकर्त्री

स्थान–लाड़नूं

दिनांक–

अनिता कुमारी

(एम.एड. छात्रा)

अनुक्रमणिका

क्र.स.	विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या
1.	**प्रथम अध्याय शोध परिचय**	**1-18**
1.1	प्रस्तावना	2-11
1.2	समस्या का औचित्य	11
1.3	समस्या से उभरने वाले प्रश्न	12
1.4	समस्या कथन	12
1.5	शोध के उद्धेश्य	13
1.6	अध्ययन से संबंधित परिकल्पनाये	13-14
1.7	तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण	14-15
1.8	जनसंख्या	16
1.9	न्यादर्श	16
1.10	शोध विधि	16
1.11	उपकरण	16
1.12	शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी	17
1.13	शोध कार्य के चर	17
1.14	परिसीमन	18
2.	**द्वितीय अध्याय सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन**	**19-36**
2.1	प्रस्तावना	20
2.2	सम्बन्धित साहित्य का अर्थ एवं परिभाषाएँ	20-22
2.3	सम्बंधित साहित्य के सर्वेक्षण के उद्देश्य	22
2.4	सम्बंधित साहित्य की सूचनाओं के स्त्रोत	23-25
2.5	संबंधित साहित्य का अध्ययन	25-35
2.6	सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष	36
3.	**तृतीय अध्याय शोध विधि न्यादर्श एवं उपकरण**	**37-59**
3.1	प्रस्तावना	38
3.2	अनुसंधान का अर्थ	39
3.3	अनुसंधान की परिभाषा	39-40
3.4	परिकल्पना	40-44
3.5	अध्ययन में प्रयुक्त जनसंख्या	44-45
3.6	अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श	45-48
3.7	अनुसंधान की विधियाँ	48-53
3.8	उपकरण	53-57

3.9	अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी	58-59
4.	**चतुर्थ अध्याय** **प्रदत्तों का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या**	**59-73**
4.1	प्रस्तावना	61
4.2	सारणीयन	61
4.3	सारणीयन का अर्थ व परिभाषा	61-62
4.4	सारणीयन के उद्धेश्य	62
4.5	सारणीयन के गुण	62-63
4.6	सारणीयन की सीमाएं	63-73
5.	**अध्याय पंचम** **शोध सार एवं भावी शोध हेतु सुझाव**	**74-92**
5.1	प्रस्तावना	75-76
5.2	समस्या कथन	77
5.3	शोध के उद्धेश्य	77
5.4	अध्ययन से संबंधित परिकल्पनाएँ	78
5.5	जनसंख्या	78
5.6	न्यादर्श	79
5.7	शोध विधि	79
5.8	उपकरण	79
5.9	शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी	80
5.10	शोध कार्य के चर	80
5.11	परिसीमन	81
5.12	शोध के परिणाम एवं निष्कर्ष	81-83
5.13	शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ	83-84
5.14	भावी शोध हेतु सुझाव	84-85
5.15	उपसंहार	85-86
	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	**87-92**
	परिशिष्ठ	

प्रथम अध्याय
शोध परिचय

अनुसंधान एक बौद्धिक प्रक्रिया हैं जो नए ज्ञान को प्रकाशन में लाती है एवं पुरानी त्रुटियों, भ्रांत धारणाओं का परिमार्जन करती है तथा व्यवस्थित रूप में वर्तमान ज्ञान कोष में वृद्धि करती है।

प्रथम अध्याय

शोध परिचय

1.1 प्रस्तावना–

CLEANLINESS IS NEXT TO GOODLINESS अर्थात् अच्छाई से पहले स्वच्छता स्थान है। जीवन जीना एक कला है। प्रत्येक प्राणी जीवन को अपने ढंग से जीना चाहता है और उसके अनुरूप ही साधन जुटाने का प्रयत्न करता है। जन्म धारण करने के बाद जब तक प्राणी संसार में जीवित रहता है। तब तक वह अपने को पर्यावरण के अनुसार समायोजित करने का प्रयत्न करता रहता है। प्राचीनकाल से ही भारतीय समाज में स्वच्छता को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। जहाँ स्वच्छता रहती है। वहाँ ईश्वरीय कृपा विद्यमान रहती है।

भारत विश्व के मानचित्र पर वह देश है जिसकी संस्कृति अखण्डित, अद्भुत है। अपनी विशिष्ट पहचाने रखता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जब भी भारत के सन्दर्भ में स्वच्छता का जिक्र किया जाता है तो इस स्वर्ग से भी सुन्दर धरा पर गन्दगी पहाड़ नजर आते है। स्वच्छता एवं साफ–सफाई के प्रति जागरूकता सृजित कर देश को साफ–सुथरा व गन्दगी से मुक्त बनाने के लिए राष्ट्रव्यापी स्वच्छ भारत अभियान का औपचारिक शुभारम्भ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 2 अक्टूम्बर 2014 को गांधी जयंती के अवसर पर किया नई दिल्ली में एक वाल्मीकि बस्ती में झाडू. लगाकर इस महत्वाकांक्षी मिशन की शुरूआत की गयी।

वास्तव में यह सत्य है कि कोई भी उद्धेश्य जब तक पूर्ण नहीं होता जब तक कि सभी लोग मिलकर सामूहिक रूप से उसकी पूर्ति हेतु कार्य न करे "निर्मल

भारत अभियान" अब "स्वच्छता मिशन" का रूप ले चुका है, जिनमें जन–जन की भागीदारी अतिआवश्यक है। महात्मा गांधी के जन्म की 150वीं वर्षगाठ वर्ष 2019 तक स्वच्छता के कार्यो को चरम तक पहुंचाकर उद्धेश्य को हासिल करना है, विभिन्न धर्मो में भी स्वच्छता को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है।

इस्लाम के अनुसार

"स्वच्छ रहने वाला व्यक्तियों से ही अल्लाह प्यार करता है, यहाँ स्वच्छता से तात्पर्य स्वयं को साफ रखने तथा परिवेश को शुद्ध रखने से है"

हिन्दू धर्म के अनुसार

"जहाँ स्वच्छता विद्यमान हो वहाँ देवीय कृपा बनी रहती है"

कैम्बिज यूनिवर्सिटी के अनुसार

"साफ रहना या वस्तुओं को स्वच्छ की अवस्था को स्वच्छता की संज्ञा दी जाती है। स्वच्छता से अभिप्राय स्वयं को गंदगी मुक्त करना है तथा एक स्वस्थ राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देता है।"

स्वच्छता अपनाने के लिए प्रत्येक नागरिक में सम्प्रत्यय का निर्माण सामाजिक रूप से करना होगा। अतः समाज का ही एक अंग विद्यालय वह स्थान है। जहाँ से इस स्वच्छता की अलख जगायी जा सकती है। स्वच्छता चाहे शारीरिक हो या वातावरण की जीवन जीने के लिए अति आवश्यक है।

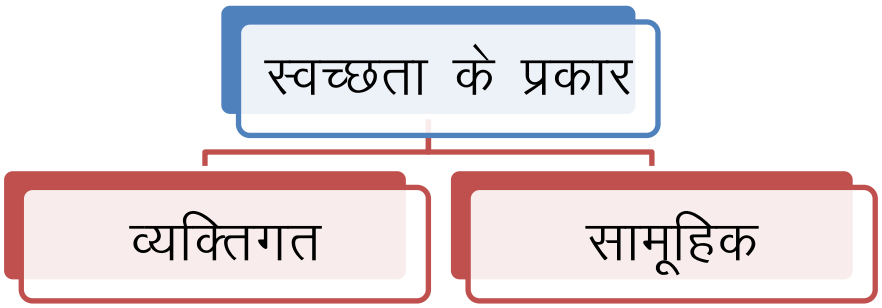

व्यक्तिगत स्वच्छताः–

व्यक्तिगत स्वच्छता से तात्पर्य व्यक्ति की स्वच्छता से लिया जाता है, स्वास्थ्य विज्ञान का वह भाग जो हमें अपनी स्वच्छता, व्यायाम, काम, विश्राम, निंद्रा पौष्टिक भोजन पर्यावरण की स्वच्छता रखने तथा स्वयं को स्वस्थ रखने का ज्ञान प्रदान है। वह व्यक्तिगत स्वच्छता कहलाता है।

स्वच्छता व्यक्ति की अमूल्य निधि है।

व्यक्तिगत स्वास्थ्य तथा व्यक्तिगत स्वच्छता एक–दूसरे के पूरक है। स्वस्थ आदतों को मनुष्य की दूसरी प्रकृति भी कहा है। व्यक्तिगत स्वास्थ्य पर ही निर्भर है। एक बिना दूसरे का अभाव रहता है।

सामुदायिक स्वच्छता :–

सामुदायिक स्वच्छता एक व्यापक सम्प्रत्यय है। सार्वजनिक स्थानों, पार्क, मन्दिर, रेलवे स्टेशन, बस स्टैण्ड, अस्पताल, विद्यालय, तालाब आदि स्थानों का संबंध समुदाय से है। अतः इन स्थानों की स्वच्छता का भार भी समुदाय के लोग वहन करते है।

स्वच्छ भारत अभियान जिसे क्लीन इंडिया मिशन या क्लीन इंडिया ड्राइव भी कहते है। भारत सरकार द्वारा चलाया गया स्वच्छता का सबसे बड़ा अभियान है। जिसमें भारत के सभी गांवों एवं शहरों की गलियों, सड़को एवं शौचालयों करने व जहाँ कही पर शौचालयों नहीं है। वहाँ नए बनाने का लक्ष्य रखा गया। भारत के प्रधानमंत्री के आहान पर स्वच्छ भारत अभियान में देश की बड़ी–बड़ी हस्तियों को भी जोड़ा गया है। स्वच्छ भारत अभियान के लिए क्रिकेट के महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर, योग गुरू बाबा रामदेव, एकटर कमल हसन, प्रियंका चौपड़ा आदि लोगों

को नामित किया गया। समय–समय अनके कार्यक्रमों के द्वारा देश को प्रेरित करते है। प्रधानमंत्री ने कहा है कि हम 2 अक्टूम्बर 2019 जो की महात्मा गांधी जी की 150 वीं जन्म शताब्दी है। जब तक देश के सभी गांवों में 1.96 लाख करोड़ खर्च करके 20 लाख शौचालय बनवा देंगे। इस अभियान के साथ जुड़ी एक कड़ी "स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय" अभियान भी है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय अभियान 25 सितम्बर से 31 अक्टूम्बर को आयोजित किया जाता है। इस अभियान के दौरान विद्यालय में संचालित की गयी विभिन्न गतिविधियाँ थी।

1. विद्यालयी कक्षाओं के दौरान प्रतिदिन बच्चों के साथ सफाई और स्वच्छता के विभिन्न पहलुओं पर विशेष रूप से महात्मा गांधी की स्वच्छता और अच्छे स्वास्थ्य से जुड़ी शिक्षाओं के संबंध में बातचीत की गई।
2. निबंध, वाद–विवाद, चित्रकला, सफाई और स्वच्छता पर प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।
3. बाल मंत्रिमण्डलों का निगरानी दल बनाया और सफाई अभियान का बीड़ा उन्हें सौंपा गया।
4. कक्षा–कक्षो, प्रयोगशाला तथा पुस्तकालयों की सफाई की गयी।
5. इसके अतिरिक्त फिल्म शो, स्वच्छता एवं अच्छे स्वास्थ्य से सम्बधित टी. वी. शो भी छात्रों को दिखाये गये।

इन सब कार्यों के वहन का उत्तरदायित्व शिक्षकों ने सफलतापूर्वक। अतः स्वच्छ भारत अभियान के रथ का सारथी विद्यालयी शिक्षक बने है। बालक देश के भावी नागरिक है। आगे चलकर देश के कर्णधार यही बनेंगे। इसलिए इन बालकों

का मानसिक, शारीरिक, नैतिक और सर्वांगीण विकास जरूरी है। जिससे वे स्वंय की स्वच्छता के साथ–साथ समुदाय की स्वच्छता का भी ध्यान रख सकें।

"बालक एक पौधे के समान है वह प्रतिदिन विकास करता है। जैसे वातावरण में बालक रहेगा वैसा ही उसका विकास होगा वैसा ही उसके स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ेगा।"

अतः बालक के विकास को नयी दिशा विद्यालय ही प्रदान करता है। बालक एक कच्चे मिट्टी के घड़े के समान है। जिसे शिक्षक जिस रूप में ढ़ालना चाहे ढ़ाल सकता है। शिक्षक के व्यक्त्वि का स्पष्ट प्रभाव छात्र के जीवन में देखा जा सकता है।

विद्यालय में ही बालक के भविष्य का निर्माण होता है। इन बालकों के भविष्य की धुरी एक शिक्षक निर्धारित करता है। किसी भी विद्यालय का सबसे महत्वपूर्ण अंग शिक्षक माना गया है। शिक्षक से ही मार्गदर्शित, अभिप्रेरित होकर विद्यार्थी अपने जीवन पथ की कठिनाइयों को पार कर सफलता के आकाश को

छूता है। अतः स्वच्छ भारत अभियान की गतिशीलता का उत्तरदायित्व भी शिक्षकों के कंधो पर है।

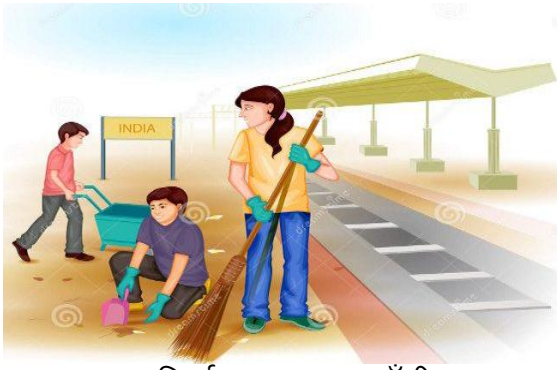

अगर 2019 तक एक निर्मल स्वच्छ भारत निर्माण महात्मा गाँधी का सपना साकार करना है। तो शिक्षकों को तेजी से कार्यबद्ध होकर ईमानदारी पूर्वक सकारात्मक अभिवृत्तिपूर्वक कार्य करना होगा।

शिक्षा के सभी अंगो यथा–शिक्षक, शिक्षार्थी, पाठ्यक्रम तथा विद्यालयक में शिक्षक का स्थान महत्वपूर्ण माना तथा कहा–विद्यालय का महत्व उसके विशाल भवनों, प्रयोगशालाओं और साधनों से नहीं अपितु उसका महत्व होता है। उसके शिक्षकों से। अतः स्वच्छ भारत अभियान को सफल बनाने के लिए शिक्षक की प्रतिबद्धता बहुत मायने रखती है। देश की साफ सुाई की जिम्मेदारी एकमात्र सफाईकर्मियों की ही नही है। हमें इस संकीर्ण मानसिकता को बदलना होगा। ''यदि हर कोई खुद अपने दरवाजे, पडौस सी सफाई कर दे, तो ये दुनिया जीवन फलने–फूलने की स्वच्छता , शुद्ध स्वस्थ जगह बन जायेगी । इसी अवधारणा को ध्यान में रखते हुए स्वच्छता को एक जिम्मेदारी बनाते हुए प्रत्येक देशवासी को स्वच्छता अभियान को सफल बनाने में अपना योगदान प्रदान करना होगा।

स्वच्छ भारत अभियान के कार्यक्रमः–

1. 1986ः–केन्द्रीय स्वच्छता कार्यक्रम

2. 1999:–सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान

3. 2012:– यूपीए सरकार का निर्मल भारत अभियान

निर्मल भारत अभियान :–

इस अभियान के अंतर्गत 2020 तक देश को खुले में शोध करने से शत प्रतिशत मुक्त बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। 12 वी पंचवर्षीय योजना में एम.बी.ए के अन्तर्गत पहले वर्ष ग्रामीण क्षेत्रो में स्वच्छता के निर्माण और उपयोग में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने का प्रयास किया गया और न केवल बी.पी एल परिवारो को बल्कि अनुसूचित जातियो और जनजातियो, छोटे और सीमांत किसानो भूमिहीन मजदूरो को विकलांग आदि को प्रोत्साहन राशि देने के अधिक प्रावधान किये गये है। समग्र स्वच्छता अभियान को 2012 में निर्मल भारत अभियान में परिवर्तित किया गया इस योजना में शौचालय निर्माण के लिए इकाई परियोजना लागत बढाकर 10000 रू. कर दी गयी । पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय के 2014 के प्रतिवेदन के अनुसार निर्मल भारत अभियान का लक्ष्य ग्रामीण परिवारों के लिए 100 प्रतिशत स्वच्छता सम्बंधी सुविधाएँ वर्ष 2012 तक उपलब्ध करना है।

स्वच्छता अपनाने के लिये प्रत्येक नागरिक में सम्प्रत्यय का निर्माण सामाजिक रूप से करना होगा। अतः समाज का ही एक अंग विद्यालय वह स्थान है जहाँ से इस

स्वच्छता की अलख जगायी जा सकती है। स्वच्छता चाहे शारीरिक हो या वातावरण की जीवन जीने के लिए अति आवश्यक है। स्वच्छता के दो मुख्य प्रकार है –

(i) व्यक्तिगत स्वच्छता

व्यक्तिगत स्वच्छता से तात्पर्य व्यक्ति की स्वयं की स्वच्छता से लिया जाता है। स्वास्थ्य विज्ञान का वह भाग जो हमें अपनी स्वच्छता, व्यायाम, काम, विश्राम, निद्रा, पौष्टिक भोजन, पर्यावरण की स्वच्छता रखने तथा स्वयं को स्वस्थ रखने का ज्ञान प्रदान करता है, व्यक्तिगत स्वच्छता कहलाता है।

"स्वच्छता व्यक्ति की अमूल्य निधि है।"

व्यक्तिगत स्वास्थ्य तथा व्यक्तिगत स्वच्छता एक–दूसरे के पूरक है। स्वस्थ आदतों को मनुष्य की दूसरी प्रकृति भी कहा जाता है। व्यक्तिगत स्वास्थ्य स्वच्छता पर ही निर्भर है। एक के बिना दूसरे का अभाव रहता है।

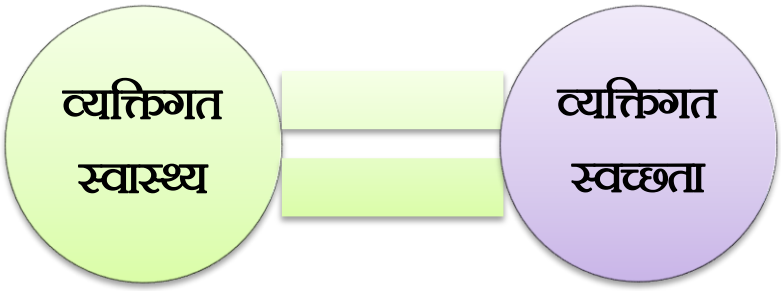

(ii) सामुदायिक स्वच्छता :

सामुदायिक स्वच्छता एक व्यापक सम्प्रत्यय है। सार्वजनिक स्थानों यथा पार्क, मन्दिर, रेलवे स्टेशन, बस स्टैण्ड, अस्पताल, विद्यालय, तालाब इत्यादि स्थानों का सम्बन्ध समुदाय से है अतः इन स्थानों की स्वच्छता का भार भी समुदाय के लोग वहन करते है। अतः व्यक्तिगत तथा सामुदायिक स्वच्छता रखना प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है।

'स्वच्छता' कोई नवीन प्रत्यय नहीं है, यह पुरातनकाल में भी उतना प्रभावशाली था जितना कि वर्तमान काल में। प्रकृति भी स्वच्छता के साथ सौम्य व दर्शनीय रूप ले लेती है।

अतः स्वच्छता प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में ही जीवन को प्रभावित करती है।

परन्तु वर्तमान समय में जहाँ शारीरिक स्वच्छता के प्रति लोगों की जागृति बढ़ी, वहीं औद्योगिकीकरण, वैज्ञानिक प्रगति, परिवहन के बढ़ते साधन तथा विकास की इस दौड़ में हम यह भूल गये कि वातावरण की अस्वच्छता से जीवों पर संकट के बादल मंडराने लगेंगे।

1.2 समस्या का औचित्यः–

वर्तमान में जिस प्रकार से भारत में गन्दगी के कारण प्रत्येक नागरिक को सालाना औसतन रूपये 7500 का नुकसान होता है। यह सारा नुकसान केवल अस्वच्छता के कारण होता है। यदि अस्वच्छता के अभिशाप को मिटा दिया जाये तो आर्थिक से भी भारत सक्षम राष्ट्र बन जायेगा।

राजस्थान भारत का वह राज्य जहाँ की मिट्टी में स्नेह, सत्कार की खुशबु व्याप्त है। परन्तुत इसे हमारा दुर्भाग्य कहे या अपने कर्मो का फल स्वच्छता की दृष्टि से हम बहुत पीछे रह गये है। राजस्थान में विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार 73.9 प्रतिशत जनसंख्या के पास शौचालय जैसी मूलभूत सुविधा भी उपलब्ध नहीं है। स्वच्छ पानी, स्वच्छ हवा का सपना भी अधूरा सा प्रतीत होता है। किन्तु विगत दिनों में भारतीय प्रधानमंत्री जी के मिशन क्लीन इंडिया 2014–19 ने इस विषय को चर्चा का केन्द्र बना दिया व दूरदर्शन, समाचार–पत्र, होर्डिंग्स, फिल्म जगत, औद्योगिक जगत भी इस स्वच्छता अभियान की बागडोर सम्भाले है। स्वच्छता का सीधा संबंध प्रत्येक नागरिक से है तथा शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके प्रकाश से हम इस अस्वच्छता के अंधेरो भरी राहों से भारत वर्ष को मुक्त करा सकते है। ऐसे में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति शिक्षकों की अभिवृति को शोध का विषय चयन करने की आवश्यकता उत्पन्न हुई।

1.3 समस्या से उभरने वाले प्रश्नः–

1. राजकीय विद्यालयों के शिक्षक स्वच्छता अभियान को गंभीरता से लेते है।
2. स्वच्छ भारत अभियान के प्रति शिक्षक जागरूक है ?
3. स्वच्छ भारत अभियान अन्य सरकारी योजनाओं की तरह केवल खानापूर्ति रह गया है।
4. विद्यालय में स्वच्छ जल, शौचालय, कक्ष–कक्षों की व्यवस्था हो रही या नहीं।
5. विद्यार्थियों को शिक्षक स्वच्छता कैम्प के आयोजन हेतु प्रतिबद्ध करते या नहीं?
6. विद्यालय प्रबन्धन स्वच्छता अभियान के प्रति सकारात्मक सहयोग की प्रवृति रखता है या नहीं ?
7. विद्यालय में बालकों को दिये जा रहें पोषाहार में स्वच्छता रही जाती है या नहीं ?
8. शिक्षक छात्रों को व्यक्तिगत या सार्वजनिक स्वच्छता का सम्प्रत्यय विकसित करते है या नहीं ?
9. विद्यालय के आस–पास के परिवेश में स्वच्छता का ध्यान रखा जाता है या नहीं ?
10. शिक्षक स्वयं आपसी तालमेल के द्वारा विद्यालय को स्वच्छ बनाने के लिए संकलित है ?

1.4 समस्या कथनः–

माध्यमिक स्तर के विद्यालयी शिक्षकों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति का अध्ययन

1.5 शोध के उद्देश्यः–

किसी भी समस्या पर शोध करने से पहले उद्धेश्यों का निर्धारण करना अति आवश्यक है क्योंकि बिना उद्धेश्यों किसी भी कार्य को करना समुचय रेत की दीवार बनाने के समान है।

जैसा कि संस्कृत में कहा है

1. माध्यमिक स्तर के निजी तथा सरकारी विद्यालयी शिक्षकों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों एवं महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ अभियान के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के निजी तथा सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों की स्वच्छ अभियान के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर के निजी तथा सरकारी विद्यालयों के महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ अभियान के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।
5. माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों तथा निजी विद्यालय की महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ अभियान के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।

1.6 अध्ययन से संबंधित परिकल्पनाये

1. माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों तथा सरकारी विद्यालयों शिक्षकों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

2. माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों एवं महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
3. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
4. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
5. माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों एवं निजी विद्यालयों की महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

1.7 तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण

माध्यमिक स्तर :–

इस शब्द का तात्पर्य है कि "माध्यमिक स्तर पाठशाला का वह भाग है जो प्राथमिक विद्यालय के बाद प्रारम्भ होता है। इसके अन्तर्गत कक्षा 9 तथा 10 को सम्मिलित किया जाता है। माध्यमिक स्तर एक क्रान्तिकारी अवस्था है। जिसमें किशोर न तो पूर्णतः बालक होते है न ही वयस्क इस समय इसके व्यक्तित्व का रूपण किया जा सकता है"

स्वच्छ भारत अभियानः–

भारत सरकार द्वारा महात्मा गांधी की जयन्ती 2 अक्टूम्बर 2014 को शुरू किया गया स्वच्छता से संबंधित अभियान जिसका लक्ष्य 2019 तक एक स्वच्छ भारत का निर्माण करना।

अभिवृतिः–

अभिवृति एक प्राणी की किसी एक विषय–वस्तु व व्यक्ति के प्रति एक विशेष अर्जित, अनुभवबद्ध तथा स्थिरीकृत संवेगात्मक प्रवृति होती है। अभिवृति मन की विशेष वृति है जो किसी घटना, विचार के प्रति हमारे दृष्टिकोण को प्रदर्शित करती है। अभिवृति का घनत्व प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग–अलग होता है। एक ही परिस्थिति का दो व्यक्तियों पर अलग–अलग प्रभाव हो सकता है।

शिक्षकः–

शिक्षक शब्द से तात्पर्य उस व्यक्ति से है जो अपने ज्ञान का हस्तान्तरण दूसरों को करता है शिक्षक विद्यालयी रूपी बगीचे में उस माली के समान है जो बालक रूपी पौधे को पोषित करता है।

1.8 जनसंख्याः–

जयपुर जिले के राजकीय एवं निजी माध्यमिक शिक्षकों का चयन जनसंख्या के रूप में किया गया।

1.9 न्यादर्शः–

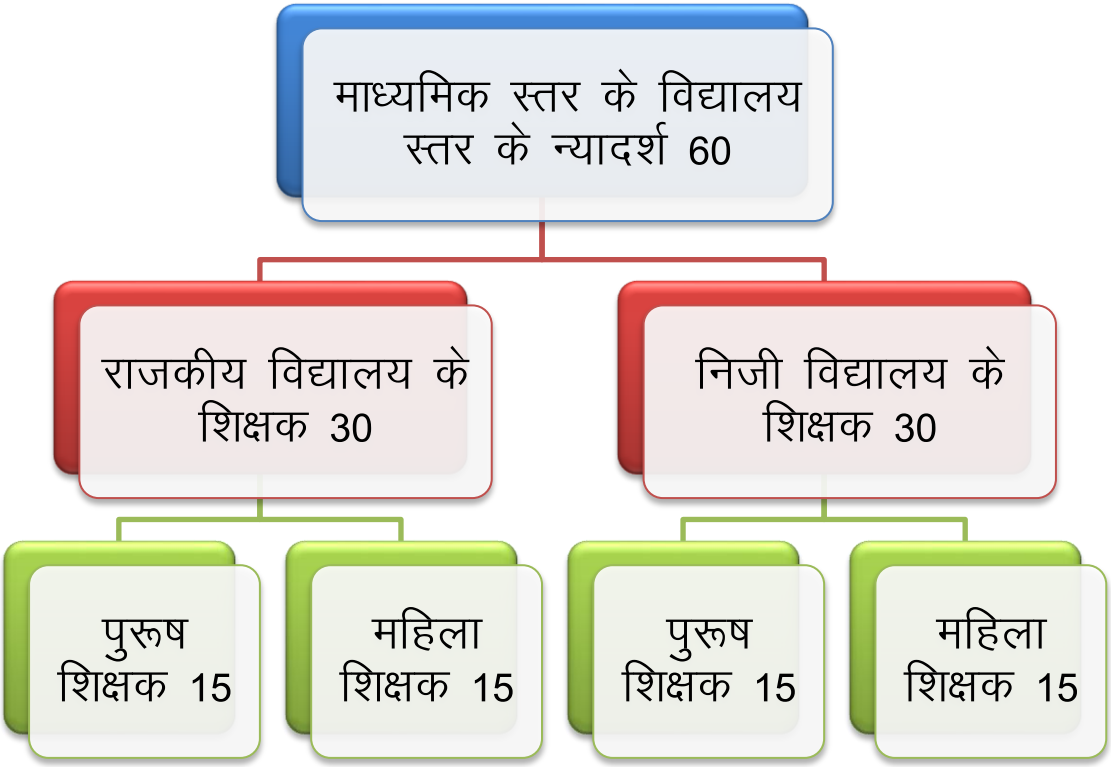

1.10 शोध विधिः–

प्रस्तुत अध्ययन में शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

1.11 उपकरणः–

प्रस्तुत अध्ययन में अप्रमापीकृत स्वनिर्मित प्रश्नावली (स्वच्छ भारत अभियान अध्यापक अभिवृति मापनी) का प्रयोग किया।

1.12 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी :-

- मध्यमान
- प्रमाणिक विचलन (SD)
- टी– मान (T Test)

1.13 शोध कार्य के चरः-

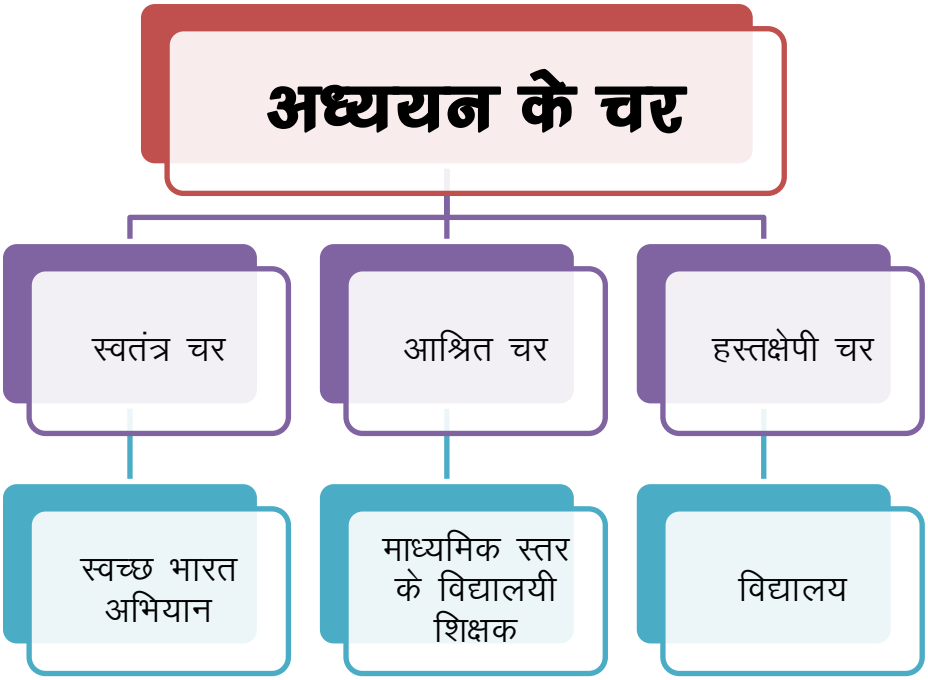

1.14 परिसीमनः–

1. यह अध्ययन राजस्थान के जयपुर जिले के माध्यमिक स्तर के शिक्षकों तक सीमित है।
2. यह अध्ययन माध्यमिक स्तर के निजी तथा राजकीय विद्यालयी शिक्षकों तक सीमित है।
3. इस अध्ययन के लिए माध्यमिक स्त्र के 60 विद्यालयी शिक्षकों का चयन किया गया।
4. प्रस्तुत लघु शोध में महिला तथा पुरूष शिक्षकों का चयन किया गया है।

द्वितीय अध्याय
सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

किसी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान है, जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य आधारित होता है। यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते, तो हमारे कार्य के प्रभावहीन एवं महत्वहीन होने की सम्भावना है अथवा वह पुनरावृत्ति भी हो सकती है

द्वितीय अध्याय

सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1. प्रस्तावनाः–

अनुसंधान की प्रक्रिया में सम्बंधित साहित्य का अध्ययन करना, इस उपक्रम का एक वैज्ञानिक एवं महत्वपूर्ण चरण हैं क्योंकि व्यक्ति अपने अतीत से संचित एवं आलेखित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करता है।

केवल मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो सदियों से एकत्रित किये ज्ञान का लाभ उठा सकता है। व्यवहारिक आधार पर सम्पूर्ण मानव ज्ञान पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं में संचित रहता है। मानव की प्रत्येक पीढी उस संचित ज्ञान को प्राप्त कर, चिन्तन कर परिष्कृत कर अथवा पूर्ण व आंशिक परिवर्तन करके निरन्तर विकसित करने का प्रयास करती रहती है। किसी भी शोध कार्य की सफलता के लिए यह आवश्यक हैं कि शोधार्थी पुस्तकालय का उपयोग करें अपनी समस्या से सम्बंधित जितनी भी यथा सम्भव उपलब्ध पुस्तकें, ग्रंथ, पत्रिकाएँ गतवर्षों में एकत्रित किये गये अनुसंधानों के संतोषप्रद विवरण से अपने को पूर्वपरिचित करें। जिससे यह ज्ञात होता हैं कि समस्या से सम्बंधित किस पथ पर कार्य हो चुका हैं, उसमें शोध कौनसी प्रविधि प्रयुक्त की गई हैं कौनसा पथ समस्या का ऐसा हैं जिसका अभी तक अध्ययन नहीं किया गया है।

2.2. सम्बन्धित साहित्य का अर्थ एवं परिभाषाएँः–

सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन दो शब्दों से मिलकर बना हैं अनुसंधान विधि में साहित्य शब्द किसी विषय के अनुसंधान के विषम क्षेत्र के ज्ञान की ओर संकेत करता है। जिसके अन्तर्गत सैद्धान्तिक व्यावहारिक और शोध अध्ययन आते

है। "पुनरावलोकन" शब्द का अर्थ, शोध के विशेष क्षेत्र के ज्ञान की व्यवस्था करना एवं ज्ञान को विस्तृत करके यह दिखाया जाता हैं कि उसके द्वारा किया गया अध्ययन इस क्षेत्र में एक योगदान होगा। सम्बंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बंधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है। जिनके अध्ययन से अध्ययनकर्ता को अपनी समस्याओं के चयन परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करना तथा कार्य को आगे बढाने में सहायता मिलती है।

सम्बंधित साहित्य का अध्ययन ही शोधकर्ता को ज्ञान के उस शिखर तक ले जाता हैं, जहाँ पर वह अपने क्षेत्र की नवीन एवं विरोधी उपलब्धियों का परिचय प्राप्त करता है। प्रत्येक पीढी उस ज्ञान को प्राप्त कर उसको निरन्तर आगे की ओर अग्रसर करने का प्रयास करती है। इस प्रकार वह अपने से पहले अनुसन्धानकर्ता से सीखकर बाद वाले के बीच की कडी बनता है।

बेस्ट के अनुसार[1]:–

"व्यावहारिक दृष्टि से सारा मानव ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालयों से प्राप्त किया जा सकता है। अन्य जीवों के अतिरिक्त जो पीढी में नये सिरे से प्रारम्भ करते हैं, मानव समाज अपने प्राचीन अनुभवों को संग्रहित तथा सुरक्षित रखता है। ज्ञान के अथाह भण्डार में मानव का निरन्तर योगदान सभी क्षेत्रों में उसके विकास का आधार है।"

डब्ल्यू. आर. बोर्ग के अनुसार[2]:–

"किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान हैं जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य आधारित होता हैं, यदि संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को

1,बोर्ग.आर. डब्ल्यू(1943) : रिसर्च मैथडोलॉजी. पृ.सं. 267-268
[2] कार्टर वी.गुड. (1954) : मैथड्स ऑफ रिसर्च एजूकेशनल साइकोलॉजी. न्यूयार्क, पृष्ठ संख्या 140.

दृढ़ नहीं कर लेते तो हमारे कार्य के प्रभावहीन एवं महत्वहीन होने की सम्भावना हैं अथवा यह पुनरावृत्त भी हो सकता है।"

गुड, वार तथा स्केट्स के अनुसारः– एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक हैं कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बंधी आधुनिक खोजों से परिचित होता रहे उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र को अनुसंधान के क्षेत्र से सम्बंधित सुचनाओं एवं खोजो से परिचित होना आवश्यक हैं।

2.3. सम्बंधित साहित्य के सर्वेक्षण के उद्देश्यः–

(1). यह अनुसंधान के लिए सिद्धान्त विचार व्याख्याएँ तथा परिकल्पनाएं प्रदान करता है। जो नयी समस्या के चयन में उपयोगी हो सकते है।

(2). यह अनुसंधान के क्षेत्र में यह जानकारी प्रदान करता हैं कि क्या और कितना हो चुका है।

(3). यह परिकल्पना के लिए साधन प्रदान करता हैं शोधकर्ता प्राप्त अध्ययन के आधार पर शोध परिकल्पनाएँ बना सकता है।

(4). चयनित समस्या के लिए किस विधि तथा प्रक्रिया का प्रयोग उपयुक्त होगा? तथा कौनसी सांख्यिकी का प्रयोग करना होगा? इन सब की जानकारी देता है।

(5). समस्या के प्रभावीकरण, अवधाणाएँ सीमांकन तथा परिकल्पना निर्माण में सहायता करता है।

2.4 सम्बंधित साहित्य की सूचनाओं के स्त्रोतः–

सम्बंधित साहित्य की सूचनाओं के लिए पुस्तकालय तथा उसके अनेक साधनों से परिचित होना आवश्यक है। पुस्तकालय में उपलब्ध किसी भी शोध के क्षेत्र में विद्यमान सूचनाओं के स्त्रोत दो प्रकार के हो सकते थेंः–

1. लिखित
2. संकलित

(1). लिखितः–

लिखित स्त्रोतों में वे सभी पूर्व संकलित सामग्री सम्मिलित हैं जो प्रकाशित अथवा अप्रकाशित रूप से हमें प्राप्त होती है। लिखित सूचना के निम्न स्त्रोत हैं–

1. विद्वानों द्वारा लिखित ग्रन्थ– इन ग्रन्थों से हमें अनुसंधान के लिए उपयुक्त सामग्री मिल सकती है।
2. शिक्षा से संबंधित मासिक एवं पाक्षिक पत्र पत्रिकाऐं लेख प्रतिवेदन आदि।
3. सरकारी समाचार पत्र।
4. बुलेटिन।
5. शोध प्रबंध पीजी एवं पी.एच.डी.

(2). संकलितः–

संकलित स्त्रोतों में अनुसंधानकर्ता प्रत्यक्ष रूप से समस्या से सम्बंधित सामग्री का चयन करता है। अर्थात् इकट्ठा करता हैं तथा दूसरों को सहयोग भी इस विषय में प्राप्त करता हैं।

संबंधित साहित्य के स्त्रोत

प्राथमिक स्त्रोतः-

- शोध प्रबंध या अनुसंधान सर्वेक्षण पत्रिकाओं में छपे लेख सामग्री।
- विशिष्ट निबंध पुस्तिकायें।
- सामयिक संदर्भ
- सामान्य संदर्भ
- शैक्षिक वार्षिकी
- जर्नल
- अनुसंधान में सहायक पुस्तके
- बुच सर्वे
- इण्डेक्स
- इण्डियन ऐज्यूकेशन रिव्यु
- विश्वविद्यालय प्रशासन
- पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाला सामाजिक साहित्य।
- शासन द्वारा प्रकाशित नीतियां व प्रतिवेदन या राजकीय प्रशासन।

2–द्वितीयक स्त्रोतः–

- विश्व ज्ञानकोष
- समय–समय पर निकलने वाली पत्रिकायें
- शिक्षा सूची
- मोनाग्राफ, बुलेटीन
- लेख सार
- ग्रन्थ सूची तथा निर्देशिकाएँ
- बोर्ड पत्रिकाएँ
- शिक्षा अनुसंधान सूचनाएँ
- अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन

2.5 संबंधित साहित्य का अध्ययन –

विदेशों में किया गये शोध अध्ययन :–

1.**विजनस वायर, डेनपार्क (2010)** "इंडियाज स्लमस रिप्रजेन्ट कॉम्पेलेक्स पालिटिकल एण्ड साशियल इशूज अकोर्डिंग टू स्टेन फोर्ड बिजनस स्कूल रिचर्स"

उद्धेश्यः– भारत की कच्ची बस्ती के अलग–अलग आय एवं स्तर के लोगों के महत्व, नैतिक दलों के संबंध एवं व्यवस्था राजनैतिक संघ की भूमिका का अध्ययन करना।

निष्कर्षः– भारत की कच्ची बस्ती के अलग–अलग एवं स्तर के लोगों के महत्व संबंधों में अन्तर होता है।

2. फू शाऊ चाऊ (2004) "घरेलू व्यक्तिओं की पर्यावरण समस्या पर प्रतिक्रिया का अध्ययन"

उद्देश्य :–

1. प्राकृतिक व मानवीय क्रियाओं व शक्तियों का अध्ययन करना जिसके कारण धरातल को अपूर्णीय क्षति पहुँचती है।

निष्कर्ष :–

1. सूचना, अभिवृत्ति व व्यवहार में धनात्मक संबध पाया गया
2. अध्ययन में सम्मिलित व्यक्तियों का ज्ञान स्तर अच्छा पाया गया
3. उत्तरदाताओं के शैक्षिक स्तर को पर्यावरण ज्ञान के संबंध में प्रभावी पाया गया।

3. टेस्टल जॉन शयन (2003) प्रौद्योगिकी के कारण पर्यावरण ह्रास पर प्रौढ़ो की जाग्रति का अध्ययन

उद्देश्य :–

1. न्यादर्श के रूप में इन्होंने फ्लोरिडा कम्यूनिटी एसोसिएशन के प्रौढो को सम्मिलित किया गया।

निष्कर्ष :–

1. प्रौढो में पर्याप्त स्तर की पर्यावरणीय जागृति पायी गयी।
2. प्रौढों की मान्यता थी कि पर्यावरणीय हास को बाधित करने वाली नवीन प्रौद्योगिक शीघ्र ही विकसित कर ली जायेगी।

4. एडवर्ड जे एण्ड केर्थालन (200) "एन्वायरमेन्टल स्टडीज इन द क्लास द 12 क्लास रूम्सः ए टीचर व्यूज"

उद्देश्य :–

1. शिक्षकों का पर्यावरण के प्रति दृष्टिकोण जानने का प्रयास किया गया।

निष्कर्ष :–

1. अधिकांश शिक्षक बिना किसी पर्यावरणीय शीर्षक विधि, विषय प्रतिवेदन के स्वअनुभव द्वारा पर्यावरणीय शिक्षा देते है।

5. मेरी काराइल, पेज एन्डूज कोपेन हेगन (2009) "डी बीफिंग एन एनालाइसिस ऑफ कॉप – 15 फॉर लॉग टू कॉरपोरेशन"

उद्देश्य :–

1. विकसित एवं गत्यात्मक विकासशील देशों की आवश्यकता एवं कठिनाईयों का पता लगाना था

निष्कर्ष :–

1. विकसित देशों की बजाय विकासशल देशों की आवश्यकता विस्तृत हैं
2. विकासशील देशों की कठिनाईयाँ अधिक हैं।

6. अथेनसीया (2005) " नेशनल पॉलिसी लोकल अवेयरनेस इम्पलीमेन्टिगं एन्वायरमेन्टल" "एजूकेशन इन द प्राइमरी स्कूल ऑफ उतरो ग्रीस"

उद्देश्य :–

1. ग्रीस के प्राथमिक विद्यालयी अध्यापकों में पर्यावरणीय ज्ञान का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. विभिन्न दार्शनिक विचारों के प्रभाव के कारण प्रत्येक अध्यापक में पर्यावरणीय ज्ञान/जागरूकता पृथक–पृथक होती है।

भारत में किये गये शोध अध्ययन :–

1. जैन प्रगति (2005)[3] :– गरीब और मलिन बस्तियों का भारत में आर्थिक परिदृश्य बदलने का प्रभाव।

उद्धेश्यः–

1. कच्ची–बस्ती में लोगों के आर्थिक विकास का अध्ययन करना।
2. कच्ची–बस्ती में रहने से उसके स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

निष्कर्षः–

कच्ची बस्तियों की आर्थिक सहायता हेतु सरकार द्वारा कई योजनाएं संचालित की जा रही है, जिनका लाभ वहां के निवासी उठा रहे है तथा स्वच्छता स्तर भी सुधार की ओर अग्रसर है।

2. अपूर्वा शकुन्तला (2009–10) :– कच्ची–बस्ती के बालकों की शारीरिक स्वच्छता का अध्ययन

उद्धेश्यः–

1. कच्ची–बस्ती के बालकों को शारीरिक स्वच्छता वातावरण, रहन–सहन का अध्ययन करना था, इस अध्ययन में 200 कच्ची बस्ती में रहने वाले बालकों का चयन किया।

---

[3] *जैन, प्रगति , एम.एड. स्तर हेतु, बीकानेर विश्वविद्यालय, राजस्थान*

2. स्वनिर्मित शारीरिक स्वच्छता अभिवृति मापनी का उपयोग उद्धेश्यों की पूर्ति हेतु उपकरण के रूप प्रयोग किया गया।

निष्कर्षः–

1. 1.कच्ची–बस्ती के बालिकाओं की शारीरिक स्वच्छता हेतु सर्वप्रथम उनके माता–पिता के दष्टिकोण को परिवर्तित करना होगा।
2. 2.कच्ची बस्ती के बालकों को शिक्षा के ओर अग्रसर करना होगा।

3. भण्डारी श्रुति, चैनपट्टी बालकृष्णन स्यूथम (2007) "एनस्योरिग क्लीनलीनेस इन स्लम्स चैन्नई"

उद्धेश्यः–

1. 1.चैन्नई के लोग दिए गए अस्थिर मकानों में किस तरह बीमारियों से बचने के लिए आस–पास की सफाई का अध्ययन करना।
2. लोगों के स्वास्थ्य व स्वच्छता के स्तर को जानना।

निष्कर्षः–

नष्ट प्रायः बस्तियों को निरन्तर रूप से आधार करके उनके जीवन स्तर व जीवन शैली को उन्नत किया जा सकता है।

4. नेशनल सर्वे रिलेटेड टू क्लीनिंग इन स्कूल (भारत सरकार स्वच्छता एवं जल मंत्रालय द्वारा 2012)

उद्धेश्यः–

भारत सरकार के स्वच्छता एवं जल मंत्रालय द्वारा एक सर्वेक्षण सन् 2012 में शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित विद्यालयों में शौचालय, पेयजल के स्वच्छता स्तर का आंकलन करने हेतु करवाया गया।

निष्कर्षः–

1. 1.कई सरकार विद्यालयों में तो छात्रों के लिए अलग से शौचालय की व्यवस्था नहीं है।
2. 2.पीने के पानी में स्वच्छता का अभाव पाया गया।

5. मिश्रा पी. (2002) "पॉपूलेशन एजूकेशन" एक जिओ एन्वायरमेन्टल स्टडी (विद स्पेशल टू चित्रकूट मण्डल)

उद्धेश्यः–

जनसंख्या वृद्धि के पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों का अवलोकन करना एवं शिक्षा द्वारा इसके हल खोजने हेतु जांच पड़ताल करना था इस अध्ययन हेतु चित्रकूट मण्डल के 200 व्यक्तियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया।

निष्कर्षः–

1. जनसंख्या वृद्धि के पर्यावरण पर अनेक दुष्प्रभाव पड़ते है।
2. बालबाड़ी, आंगनबाड़ी एवं युवा संगठनों द्वारा शिक्षा के प्रसार द्वारा ही सम्भव है।

6.भाटी कंवर मधु (2009–10) "विभिन्न विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों का स्वास्थ्य शिक्षा के प्रति ज्ञान एवं अभिवृति का अध्ययन"

उद्धेश्यः–:

विभिन्न विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों का स्वास्थ्य शिक्षा के प्रति ज्ञान का अध्ययन करना।

निष्कर्षः–

1. विभिन्न विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों का स्वास्थ्य शिक्षा के प्रति ज्ञान व अभिवृति में अन्तर नहीं पाया जाता है।

2. स्वास्थ्य शिक्षा के प्रति अध्यापक समान स्तर की अभिवृति रहती है।

5. डूंगाराम (2005–06) "जोधपुर शहर के अध्यापकों का आपदाओं के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना"

उद्देश्य :–

1. आपदाओं के प्रति अध्यापकों की जागरूकता का अध्ययन करना
2. राजकीय व निजी अविद्यालयों के अध्यापकों की आपदाओं के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना

निष्कर्ष :–

1. सरकारी व निजी विद्यालय के अध्यापकों में आपदा के प्रति जागरूकता पायी गयी।
2. अध्यापक व अध्यापिकाओं में आपदाओं के प्रति जागरूकता पायी गयी।
3. निजी व सरकारी विद्यालयों की अध्यापिकाओं में आपदा के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

6. पवार प्रियंका (2005–06) "ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता व ध्वनि अनुकूलता का तुलनात्मक अध्ययन"

उद्देश्य :–

1. ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना
2. ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में ध्वनि अनुकूलता का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में ध्वनि अनुकूलता के सम्बंध में कोई अन्तर नहीं होता है।

7. शर्मा सुमन (2005) "ढूँढाड़ व शेखावाटी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं में जनसंख्या पर्यावरण व राष्ट्रीय चेतना का तुलनात्मक अध्ययन"

उद्देश्य :–

1. विद्यालयी विविधता के सन्दर्भ में छात्र–छात्राओं की जनसंख्या चेतना पर्यावरण अभिवृत्ति व राष्ट्रीय चेतना का पता लगाना।
2. छात्र–छात्राओं की जनसंख्या पर्यावरण व राष्ट्रीय चेतना के पारस्परिक सह सम्बंध का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. प्रस्तुत शोध कार्य का प्रमुख निष्कर्ष है कि ढुँढाड़ व शेखावाटी क्षेत्र में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की जनसंख्या पर्यावरण राष्ट्रीय चेतना में कुछ ही मात्रा में सार्थक अन्तर है।

8. जागावात महिपाल सिंह (2011) "विभिन्न सम्प्रेषण माध्यमों का माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय के प्रति जागरूकता का प्रभाव : एक अध्ययन"

उद्देश्य :–

1. माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का पर्यावरण जागरूकता व सम्प्रेषण माध्यम के मध्य सहसम्बंध ज्ञात करना

निष्कर्ष :–

1. पर्यावरण के प्रति जागरूकता के आयाम मानव पर्यावरण सम्बंध का सम्प्रेषण जागरूकता के मध्य सहसम्बंध धनात्मक पाया गया है

9. चावला नीना (2011) "बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण व जीवन मूल्यों के प्रति जागरूकता का अध्ययन"

उद्देश्य :–

1. समग्र रूप से बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
2. कला व वाणिज्य संकाय के बी. एड. प्रशिक्षाणार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. बी. एड. प्रशिक्षणार्थी पर्यावरण के प्रति उच्च स्तरीय जागरूकता रखते है।
2. विज्ञान संकाय के बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में कला व वाणिज्य संकाय के प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता स्तर कम पाया गया है।

10. कासम हसीना (2007) "भावी शिक्षको की पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन"

उद्देश्य :–

1. भावी शिक्षकों में पर्यावरणीय जागरूकता का पता लगाना।
2. कला व विज्ञान क्षेत्र के भावी शिक्षको की पर्यावरणीय जागरूकता में अन्तर ज्ञात करना।
3. क्षेत्रवार जागरूकता का पता लगाना।

निष्कर्ष :–

1. विज्ञान व कलां संकाय में सबसे अधिक जागरूकता मृदा संरक्षण में व सबसे कम वायु प्रदूषण में है।
2. विज्ञान वर्ग की अपेक्षा अनुसूचित जाति/जनजाति अन्य पिछड़ी जातियों की छात्राध्यापिकाओं की जागरूकता से अधिक है।

11. डॉ. मोदी विकास (2006) "पर्यावरण बोध पर आर्थिक स्तर का प्रभाव"

उद्देश्य :–

1. उच्च एवं निम्न आर्थिक स्तर के बालकों के पर्यावरण बोध के आधार पर परस्पर तुलना करना।
2. लिंगभेद के आधार पर उच्च एवं निम्न स्तर के बालक–बालिकाओं में पर्यावरण बोध का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. उच्च एवं निम्न स्तर के बालकों के पर्यावरण बोध परीक्षण के प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर पाया गयझं
2. उच्च एवं निम्न स्तर के बालकों के पर्यावरण बोध में सार्थक अन्तर पाया गया।

12. रेड्डी सी. ए. (2004) "इफेक्ट ऑफ फिजिकल एजुकेशन ऑन डोफ एण्ड डम्ब स्टूडेन्ट"

उद्देश्य :–

1. शारीरिक शिक्षा का गूँगे एवं बहरे छात्रों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. शारीरिक स्वच्छता की गतिविधियों में नियमित रूप से भाग लेने से बालकों में प्रेरक व्यवहार व समन्वयात्मक गतिविधियों में सकारात्मक रूप से वृद्धि होती है।

13. सिंह रवीन्द्रनाथ (2006) "ए स्टडी ऑफ द एन्वायरमेन्टल अवेयरनेस टू स्कूल एजूकेशन"।

उद्देश्य :–

1. विद्यालयी शिक्षा में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना था।
2. 1699 विद्यालयों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया

निष्कर्ष :–

1. विद्यालयों में पौधशाला कार्यक्रम की आवश्यकता है।
2. विद्यालयी वातावरण को स्वच्छ बनाने की ओर कड़े कदम उठाने होंगे।

14. चौधरी रेखा (2010–2011) "माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन"

उद्देश्य :–

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना चाहिए।

निष्कर्ष :–

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी निजी विद्यालयी शिक्षक पर्यावरण शिक्षा के प्रति समान स्तर की

2.6 सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष

इस प्रकार अग्रलिखित सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करने, विश्लेषण करने और उस पर चिन्तन करने से प्रस्तुत शोध समस्या की सम्प्रत्यात्मक पृष्ठभूमि तथा अनुसंधान प्रारूप एवं निष्कर्ष हेतु शोधकर्त्री को आधार प्राप्त हुआ, जिसका प्रस्तुतीकरण सार रूप में इस प्रकार किया जा ldrk है

- कोई भी अध्ययन माध्यमिक स्तर के राजकीय तथा निजी विद्यालयों में स्वच्छ भारत अभियान कार्यक्रम के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित नहीं पाया गया।
- अध्यापकों की पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक पायी गयी।
- अध्यापकों में विद्यालयी स्वच्छता के लिए जागरूकता पायी गयी।
- स्वच्छता का सीधा–सीधा सम्बन्ध विद्यालयी शारीरिक शिक्षा से पाया गया।
- सरकारी तथा निजी दोनों विद्यालयों के शिक्षकों में पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति अत्यधिक रूचि पाई गयी।
- स्वच्छता स्तर का व्यक्ति के आर्थिक परिवेश पर भी प्रभाव पाया गया।
- स्वास्थ्य शिक्षा के प्रति सभी शिक्षकों की अभिवृत्ति व ज्ञान समान स्तर के हैं।
- कच्ची–बस्ती में रहने वाले बालकों का जीवन स्तर निम्न श्रेणी का पाया गया।
- विकासशील देशों में आज भी स्वच्छता रखना एक समस्या ही है।
- शिक्षकों में सृजनात्मकता के प्रति अभिरूचि उच्चत्तम पायी गयी।

तृतीय अध्याय
शोध विधि, न्यादर्श एवं उपकरण

तृतीय अध्याय शोध विधि का खाका प्रस्तुत करने हुए तथ्य संग्रहण के तरीकों पर भी प्रकाश डालता है। गणना योग्य आँकड़ों के विश्लेषण की सांख्यिकीय विधियों का उल्लेख करते हुए प्रयुक्त उपकरण का परिचय भी प्राप्त होता है। उपकरण की वैधता विश्वसनीयता की विवेचना की जाती है।

तृतीय अध्याय
शोध विधि न्यादर्श एवं उपकरण

3.1 प्रस्तावनाः–

सम्बन्धित साहित्य के विश्लेषण के पश्चात् अनुसंधान कार्य में किसी भी शोध समस्या के समाधान के लिए और उसके उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अनुसंधान विधि, प्रविधि एवं उपकरण सम्पूर्ण अनुसंधान कार्य में आधारशिला रूपी नीवं हैं अतः अनुसंधान कार्य के लिए उपयुक्त अध्ययन विधि, उपकरण एवं सांख्यिकी का चयन करना महत्वपूर्ण है। एक अनुसंधानकर्ता अपने अनुसंधान को प्रारम्भ करने से पूर्व उसके सभी पक्षों के संबंध में पहले ही निर्णय लेकर नियोजन करता हैं और इसी नियोजन के आधार पर वह अनुसंधान कार्य में आने वाली कठिनाईयों का सामना आसानी से कर पाता है। अतः यह अति आवश्यक हैं कि शोध कार्य शुरू करने से पूर्व उपकरण व विधियों का नियोजन व निर्माण किया जायें तभी अनुसंधान कार्य प्रभावी बन सकेगा। अनुसंधान कर्ता का कर्तव्य हैं कि वह अपने शोध द्वारा सही निष्कर्ष प्रस्तुत करे इस कर्तव्य का पालन करने के लिए कार्य करने से पहले योजना बनाना आवश्यक है। कोई भी सफलता उसकी योजना योग्यता एवं कार्यविधि पर निर्भर करती है। बिना योजना बनाएं शोध कार्य करना उस पथिक के समान होगा जिसे यह पता नहीं कि उसे कहा जाना है। इससे वह आसानी से भटक सकता हैं एक शोधकर्ता के पास समय व धन की कमी होते हुए भी शोध कर्या में विश्वसनीयता एवं यथार्थता लाना तभी सम्भव होगा जबकि उसकी पूर्व में ही योजना बनाई जाये।

3.2 अनुसंधान का अर्थः–

अनुसंधान को अग्रेंजी में रिसर्च कहते हैं तथा सर्च का अर्थ 'खोजना' हैं अर्थात् किसी तथ्य को पूर्ण मनोयोग से खोजना।

अनुसंधान का अर्थ पूर्णतया तथ्यों, ज्ञान एवं घटनाओं की खोज करना ही नहीं हैं अपितु नवीनतम तथ्यों के सन्दर्भ में स्वीकृत निष्कर्षो के परिशोधन हेतु आलोचनात्मक ढंग से विस्तारपूर्वक परिक्षण एवं अन्वेषण करना भी उसके अन्तर्गत आता है। इसलिए इसे रि (पुनः) सर्च (खोज) की संज्ञा दी गई है।

प्रस्तुत अध्ययन में यह बताया गया हैं कि अध्ययन में किस शोध विधि का चयन किया गया है तथा न्यादर्श के चयन में कौनसी विधि का चयन व उपयोग किया गया है। तथा शोध में कौन–कौनसे उपकरण प्रयुक्त किये गये हैं उनका विवरण तथा किन सांख्यिकी विधियों का चयन किया गया है। अनुसंधान एक वैज्ञानिक खोज हैं जो क्रमबद्ध प्रयासो द्वारा ईमानदारी के साथ बुद्धिपूर्वक पूर्णरूपेण की जाती है।

3.3 अनुसंधान की परिभाषाः–

(1). **पी. एम कुक के अनुसारः–** "अनुसंधान किसी समस्या के प्रति ईमानदारी एवं व्यापक रूप में समझदारी के साथ की गई खोज है जिसमें तथ्यों तथा अर्थो की जानकारी की जाती है। अनुसंधान की उपलब्धि तथा निष्कर्ष प्रमाणिक तथा पुष्टियोग्य होते हैं जिससे ज्ञान में वृद्धि होती है।"

(2). **रेडमैन और गौरी के अनुसारः–** "नवीन ज्ञान की प्राप्ति हेतु व्यवस्थित प्रयत्न को हम अनुसंधान कहते है। तत्व चर अथवा परिस्थितियाँ हो सकती हैं उनकी

विश्लेषण द्वारा जानकारी प्राप्त की जाती है। उसके बाद विश्लेषण द्वारा ही उनमें से कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण चरों का चुनाव करके उनका समस्या समाधान के रूप अथवा प्रश्नों के सम्भावित उत्तरों के रूप में परिक्षण किया जाता है।"

(3). **स्पार तथा स्वेसन के अनुसारः–** "कोई भी विद्ववतापूर्वक अनुसंधान की सत्य के लिए तथ्यों के लिए निश्चितताओं के लिए अन्वेषण है।"

3.4 परिकल्पनाः–

परिकल्पना का अर्थः–

जब किसी व्यक्ति के सामने कोई कठिनाई उत्पन्न हो जाती हैं तो वह उसके निवारण के उपाय भी सोचने लगता है। फलस्वरूप जो उपाय उसके मस्तिष्क में आते हैं वे ही समस्या के सम्भावित समाधान होते है। ये सामान्य अनुमान ही परिकल्पनाएं कहलाती है।

परिकल्पना का शाब्दिक अर्थः–

परिकल्पना को अंग्रजी में Hypothesis कहते हैं जो दो शब्दों से मिलकर बना हैं हाइपो (Hypo)+ थीसिस (Thesis)। हाइपो का अर्थ हैं सम्भावित या जिसकी पुष्टि की जाये तथा थीसिस का अर्थ हैं समस्या के समाधान का कथन इस प्रकार हाइपोथिसिस का शाब्दिक अर्थ हुआ वह सम्भावित कथन जो समस्या का समाधान प्रस्तुत करता है। अर्थात् परिकल्पना उस समाधान को प्रस्तुत करती हैं जिसकी पुष्टि प्रदत्तों के आधार पर की जाये।

परिकल्पना की परिभाषाएँः–

1. **टाउनसैण्ड (1953)–** ''समस्या के समाधान हेतु एक प्रस्तावित हल के रूप में परिकल्पना को परिभाषित किया जा सकता है।''

2. **करलिंगर–** ''परिकल्पना वह कल्पनात्मक कथन हैं जो दो या दो से अधिक चरों के संबंध में होता है।''

3. **मैक्गुइगन (1969)–** ''परिकल्पना एक परीक्षण योग्य कथन हैं जो दो या दो से अधिक चरों के शक्तिशाली संबंध के संबंध में होता है।''

4. **मूले के अनुसारः–** परिकल्पना एक अभिक्रम अथवा तर्क वाक्य हैं जिसकी स्थिरता का परीक्षण उसकी अनुरूपता उपयोग, अनुभवजन्य प्रभाव व पूर्ण ज्ञान के आधार पर करती है।

परिकल्पना के उद्देश्यः–

1. परिकल्पना शोध के लिए दिशा प्रदान करती है। उपयोगी प्रदत्तों के संकलन में सहायता प्रदान करती है।

2. परिकल्पना अध्ययनकर्ता को संवेदनशील बनाती हैं जिससे वह अनावश्यक परिस्थितियों तथा प्रदत्तों के संकलन से बच जाता है।

3. परिकल्पना द्वारा शोधकर्ता की समस्या को सही रूप में समझने में सहायता मिलती हैं तथा समस्या का रूप स्पष्ट हो जाता है।

4. परिकल्पना द्वारा शोध के निष्कर्षो के प्रतिपादन में सहायता मिलती है।

परिकल्पनाओं के प्रकारः–

परिकल्पनायें रूप तथा संदर्भ के आधार पर कई प्रकार की होती है। परिकल्पना का रूप उसके कार्य के आधार पर निर्धारित किया जाता हैं साधारणतया परिकल्पनायें निम्न प्रकार की होती हैं–

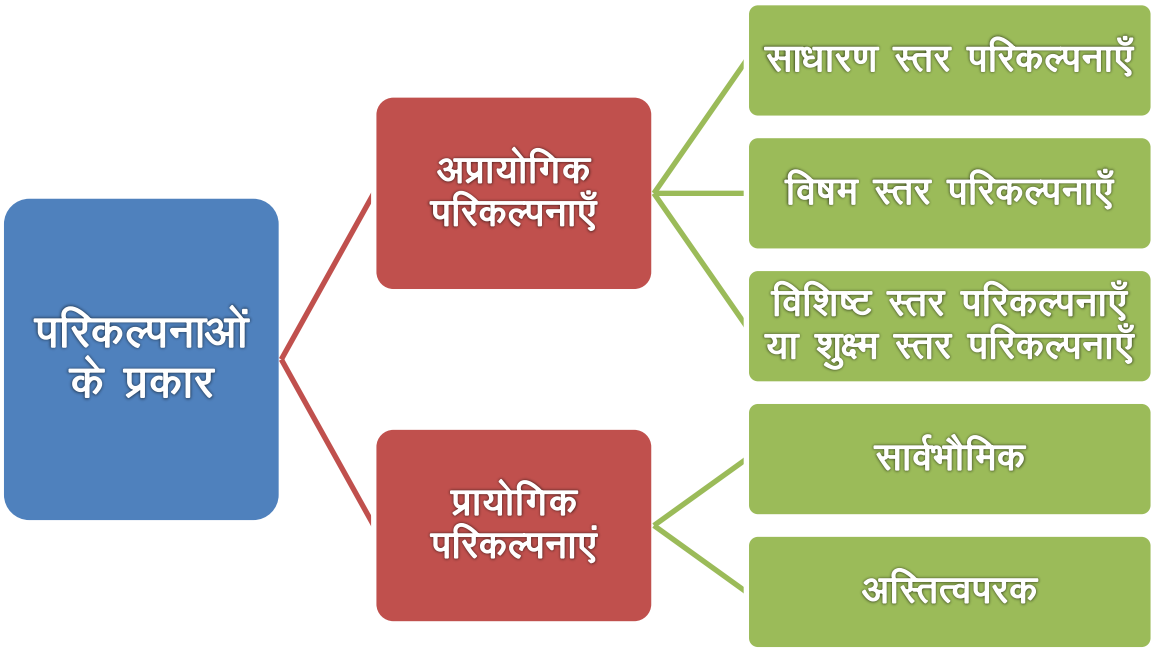

कथन के आधार पर भी प्रायोगिक कल्पना दो प्रकार की होती हैं–

कथन के आधार पर परिकल्पना के प्रकार–

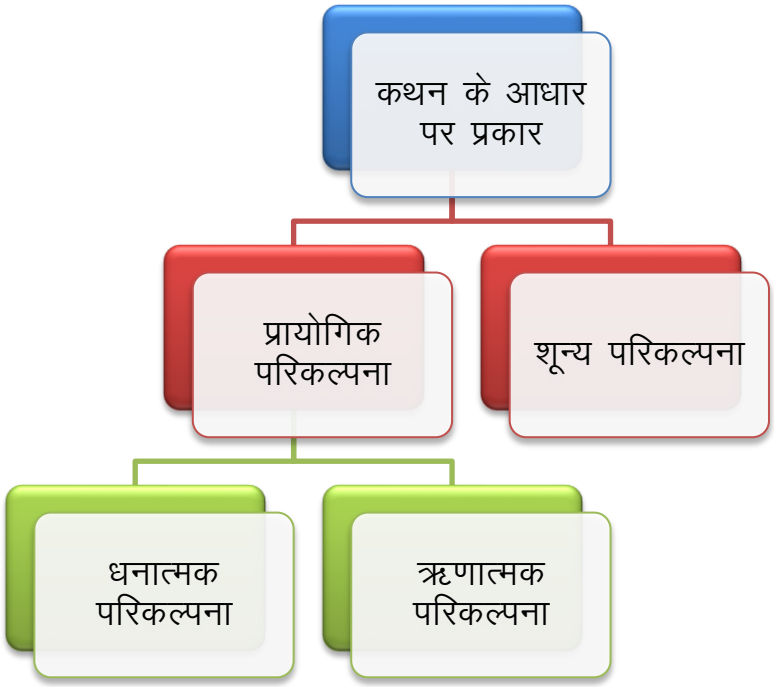

परिकल्पना का महत्त्वः–

शोध कार्य में परिकल्पना का विशिष्ट स्थान है। शोध की समस्त प्रक्रियाएँ परिकल्पनाओं के चारों ओर केन्द्रित होती हैं। परिकल्पना के महत्त्व को निम्न बिन्दुओं द्वारा समझ सकते है–

1. परिकल्पना अनुसंधान की दिशा को स्पष्ट करती हैं फलस्वरूप शोध कर्ता को इधर–उधर नहीं भटकना पड़ता।

2. अनुसंधान परिकल्पनाओं द्वारा यह भी स्पष्ट हो जाता हैं कि किस प्रकार की अनुसंधान विधि अनुसंधान आकल्प का प्रयोग किया जायेगा शोध सामग्री किन व्यक्तियों किन स्थानों पर तथा किस प्रकार की मनोवैज्ञानिक परीक्षाओं के माध्यम से एकत्र की जायेगी। इस दृष्टिकोण से परिकल्पनाओं का अनुसंधान में अत्यधिक महत्त्व है।

3. परिकल्पनाएँ उस प्रतिपेक्ष्य को भी प्रस्तुत करती हैं जिसमें समस्या के समाधान स्वरूप निष्कर्षो की स्थापना करनी होती है। समस्या की वस्तुनिष्ठ रूप में व्याख्या करने में परिकल्पनाएँ बहुत सहायक होती है।

4. परिकल्पना ज्ञान के सृजन का अन्तिम बिन्दु नहीं होती। एक परिकल्पना का परीक्षण दूसरी को जन्म देती है। दूसरी का परीक्षण तीसरी को प्रत्येक अनुसंधान की परिकल्पनाओं का परीक्षण आगामी परीक्षण पेक्षी परिकल्पनाओं की ओर संकेत करता है।

अध्ययन में प्रयुक्त परिकल्पनाये

1. माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों तथा सरकारी विद्यालयों शिक्षकों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

2. माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों एवं महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

3. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
4. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
5. माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों एवं निजी विद्यालयों की महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

3.5 अध्ययन में प्रयुक्त जनसंख्या

अनुसंधान में समष्टि तथा जनसंख्या समान अर्थ रखते हैं। सामान्यतः वस्तुओं, व्यक्तियों या घटनाओं के उस साकल्य को समष्टि कहा जाता है जिसके बारे में उसके कुछ व्यक्तियों या घटनाओं अथवा पदार्थों को प्रतिदर्श के रूप में लेकर तथ्य संग्रह किया जाता है, और उन तथ्यों के आधार पर उस सम्पूर्ण संघात के बारे में अनुमान लगाया जाता है।

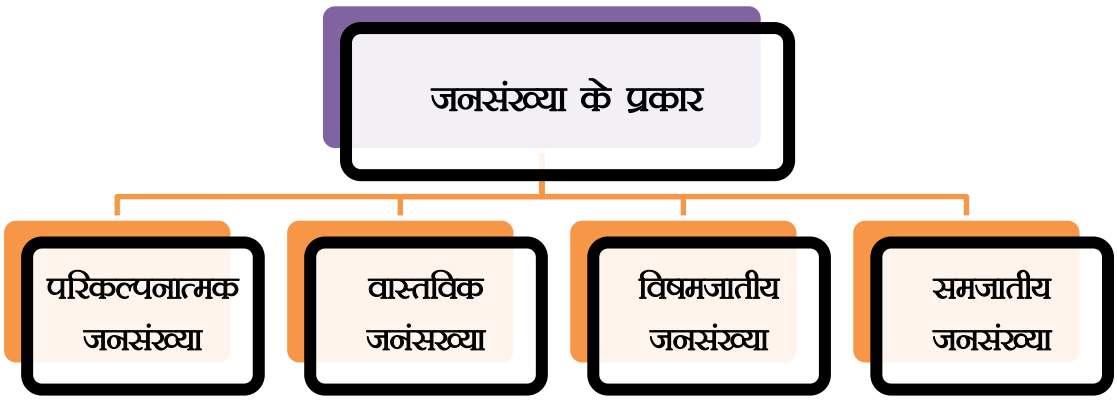

प्रस्तुत शोध में जनसंख्या के रूप में जयपुर जिले के माध्यमिक स्तर के शिक्षकों का चयन किया गया है।

3.6 अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श

न्यादर्शः–

किसी भी शोध में सबसे महत्वपूर्ण न्यादर्श होता है। क्योंकि किसी भी अनुसंधानकर्ता के लिए यह सम्भव नहीं हैं कि वह पूरे जनसंख्या के समग्र के सभी व्यक्तियों को अपनी खोज का विषय बना सकें। इसलिए जनसंख्या में से कुछ व्यक्तियों का चयन कर लिया जाता हैं जो कि समग्र का प्रतिनिधित्व करें और जिन पर किये गये अध्ययन के आधार पर समग्र के लिए चयनित व्यक्तियों के ऐसे समूह को न्यादर्श कहते है। समय की मितव्ययता होने से अधिकतम अनुसंधानों में न्यादर्श लेकर ही अध्ययन करते है। इसमें इकाईयों की समग्र से काफी कम होती हैं जिससे विवेचन काफी सरल होता है।

न्यादर्श की परिभाषाएंः–

(1). **बोगार्डस (1954)[1]–** ''पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार एक समूह में से निश्चित प्रतिशत की इकाईयों का चुनाव ही प्रतिचयन कहलाता है।''

(2). **करलिंगर (1973)–** ''किसी जनसंख्या या समष्टि से उसके प्रतिनिधिस्वरूप एक अंश चुन लेने को प्रतिचयन कहते है।''

(3). **गुड एवं हैट[2]–** ''एक न्यादर्श जैसा कि नाम से स्पष्ट हैं कि सम्पूर्ण समूह का एक निम्नतम प्रतिनिधित्व है।''

---

[1] *डॉ०शशिकला सरीन एवं डॉ० अंजलि सरीन (2007) : शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ. आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर. पृ.सं. 117-118*

[2] *करलिंगर एफ.एन.: फाउण्डेशन्स ऑफ बिहेवियर रिसर्च, न्यूयार्क पृ.स. 741*

(4). **पी.वी.यंग[3] –** ''एक सांख्यिकीय निदर्शन सम्पूर्ण समूह योग का एक लघुकृत आकार का चित्र है। जिससे कि निदर्शन लिया जाता है।''

न्यादर्श के लाभः–

न्यादर्श के लाभ निम्नलिखित हैं–

(1). न्यादर्श के द्वारा सर्वेक्षण की आर्थिक लागत कम हो जाती है।

(2). न्यादर्श के द्वारा वे प्रदत्त भी सम्भव हो पाते है। जो समग्र के अध्ययन से सम्भव नहीं हो पाते।

(3). प्रदत्तों व प्रतिक्रियाओं का सम्पादन व जाँच सरल हो जाती है।

(4). न्यादर्श में व्यक्तियों की संख्या कम होने से परीक्षणों के प्रशासन में सुविधा रहती है।

(5). न्यादर्श के आधार पर एकत्रित आंकड़ो का विश्लेषण तथा चित्रात्मक प्रदर्शन सम्भव व सरल होता हैं तथा निष्कर्षो की विवेचना सम्भावना सिद्धान्त के आधार पर की जा सकती है।

न्यादर्श की सीमाएँः–

न्यादर्श के लाभ होते हुए भी कुछ सीमाएं है जो इस प्रकार हैंः–

(1). न्यादर्श पद्धति से कभी–कभी न्यादर्श त्रुटि का पूर्व कथन सम्भव नहीं होता है।

(2). कही–कहीं समग्र जनसंख्या का अध्ययन आवश्यक हो जाता हैं वहाँ न्यादर्श से काम नहीं चलता है।

(3). न्यादर्श में पक्षपात की संभावना बनी रहती है।

---

[3] *यंग पी.वी. (1996) : साईंटिफिक सोशल सर्वेज रिसर्च दिल्ली प्रिंटिंग हॉल पृ.स. 33*

(4). जनसंख्या के विषमजातीय होने पर न्यादर्श द्वारा अध्ययन पद्धति दोषपूर्ण हो जाती है।

(5). जनसंख्या का स्वरूप सीमित होने पर न्यादर्श द्वारा अध्ययन पद्धति दोषपूर्ण हो जाती है।

न्यादर्श चयन की विधियाँः–

सम्भाव्य न्यादर्श	असम्भाव्य न्यादर्श
यादृच्छिक न्यादर्श	अंश न्यादर्श
स्तरीकृत न्यादर्श	सोद्देश्य न्यादर्श
गुच्छ न्यादर्श	आकस्मिक न्यादर्श
द्विष न्यादर्श	सम्पूर्ण न्यादर्श
क्रमबद्ध न्यादर्श	निर्णित न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त न्यादर्श की विधिः–

प्रस्तुत शोध समस्या के लिए न्यादर्श के चुनाव हेतु यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया है। इस विधि के प्रयोग द्वारा प्रत्येक इकाई के प्रतिदर्श आने की सूची बना लेते हैं फिर इकाईयों को बिना किसी पक्षपात के चुन लिया जाता हैं ये सम्पूर्ण इकाईयाँ जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करती है।

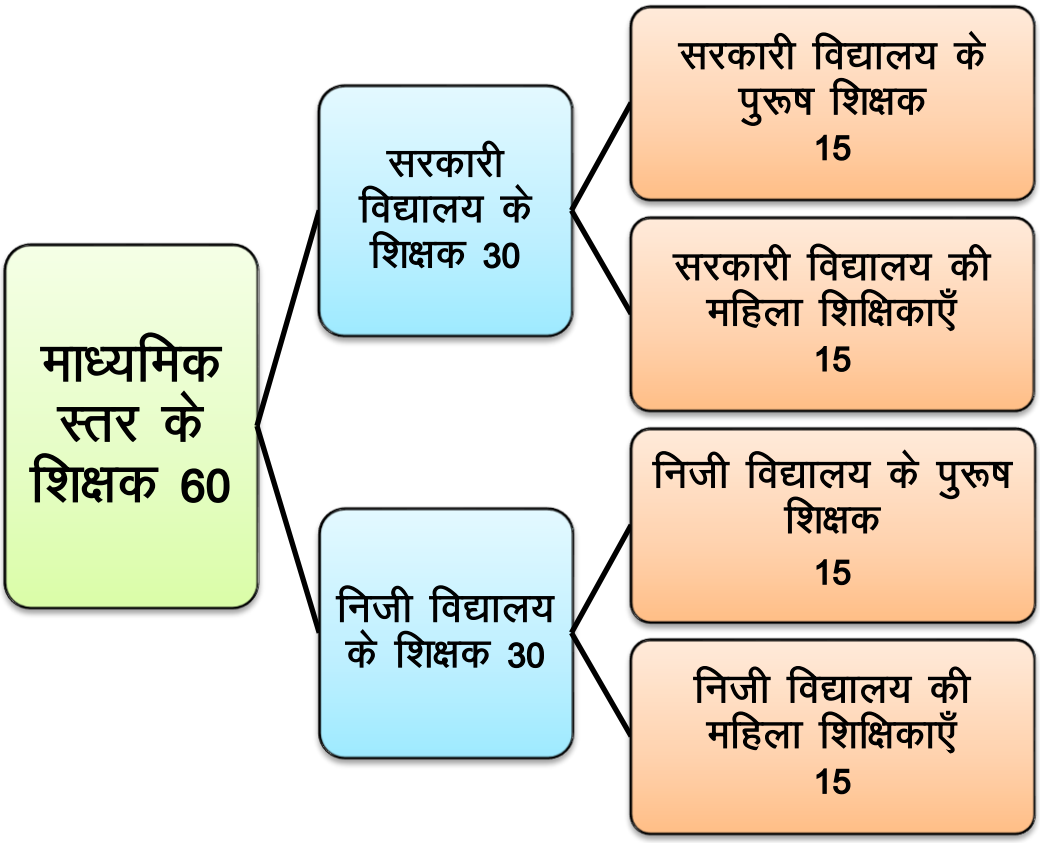

3.7 अनुसंधान की विधियाँः-

अनुसंधानकर्ता अनुसंधान कार्य के लिए जिस विधि का प्रयोग करता हैं वह समस्या की प्रकृति पर निर्भर करता है। यदि समस्या की प्रकृति वर्णनात्मक हैं तो उसे वर्णनात्मक कहेंगे और यदि समस्या की प्रकृति ऐतिहासिक हैं तो उसे ऐतिहासिक अनुसंधान कहेंगे और यदि समस्या की प्रकृति प्रयोगात्मक हैं तो उसे प्रयोगात्मक अनुसंधान कहेंगें।

जार्ज जे. मूले ने अनुसंधान को तीन मौलिक रूपों में विभाजित किया हैं जिसके आधार पर शोध की तीन विधियाँ हैं।

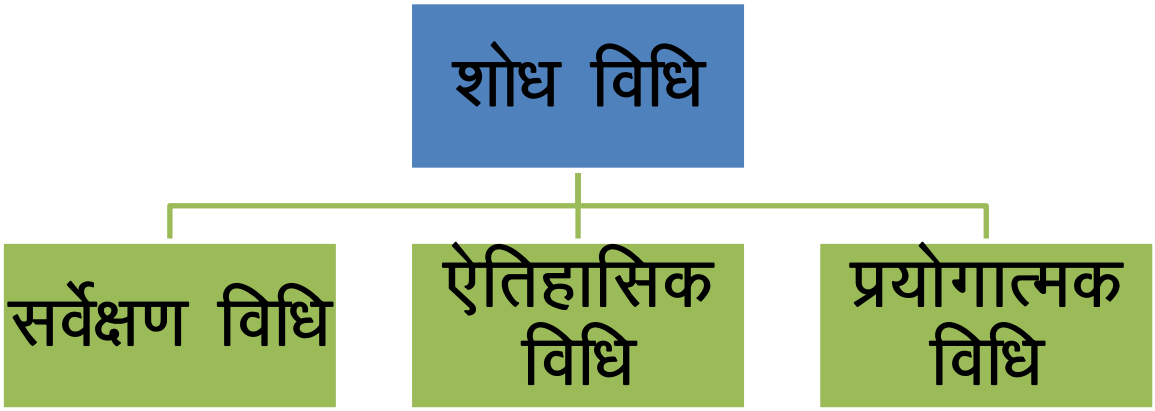

अध्ययन में प्रयुक्त विधिः–

अनुसंधान में अनेक विधि साक्षात्कार, अवलोकन विधि, प्रयोगात्मक आदि विधियों का प्रयोग किया जाता है। शोधकर्ता किसी विधि का चयन करेगा यह शोध समस्या पर निर्भर करता है। यदि शोधकर्ता अपनी विधि की व्याख्या स्पष्ट रूप से नहीं कर सकता हैं तो परिणामों को अत्यधिक एवं सामान्य बने रहने की सम्भावना बनी रहती है। क्योंकि शोधकर्ता शोध विधि के द्वारा ही आंकडों का संकलन करता है। अतः समस्या के आंकडें तैयार करने हेतु तथा शोध कार्य को वैज्ञानिकता प्रदान करने हेतु अनुसंधानकर्ता आवश्यक रूप से कुछ विधियों प्रविधियों एवं उपकरणों के लिए शैक्षिक अनुसंधान की विधियों में सर्वेक्षण विधि का चयन किया है। शोधकर्त्री ने अपने अध्ययन की प्रकृति को देखते हुए सर्वेक्षण विधि का चयन किया हैं ताकि सही परिणाम प्राप्त हो सके।

सर्वेक्षण विधि का अर्थः–

सर्वेक्षण विधि को अंग्रजी में Survey Method कहा जाता है। Survey दो शब्दों से मिलकर बना हैं Sur+vey। Sur का अर्थ हैं over तथा ver का अर्थ To Look होता है। अर्थात् ऊपर की ओर देखना। इस प्रकार सर्वे का अर्थ अवलोकन

या अन्वेषण से होता है। जिसका उद्देश्य एक क्षेत्र को किसी एक स्थिति अथवा उसे प्रचलन के संबंध में अर्थात् सूचना प्रदान करना होता हैं सर्वेक्षण विधि उन वर्तमान तथ्यों का उद्‌घाटन करती हैं जो समस्या में निहित है। इस विधि से तथ्यों का निष्कर्ष निकालने व उनकी व्याख्या करने के लिए केवल अपेक्षित प्रश्नों का उत्तर ही प्राप्त होता हैं बल्कि समस्या से संबंधित तथ्यों की वर्तमान स्थिति भी स्पष्ट हो जाती है।

सर्वेक्षण की परिभाषाएँः–

(1). **मैकमिलन के अनुसारः–** "सर्वेक्षण एक संगठन की प्रक्रिया हैं इसका उस समय प्रयोग किया जाता हैं जब अनुसंधान प्राथमिक रूप में कार्यकरण संबंध से सम्बंधित नहीं होता।"

(2). **ट्रेवर के अनुसार–** "सर्वेक्षण विधि वर्तमान कार्यो की प्रकृति को निश्चित करने की विधि है।"

(3). **एम.एल. विटनी के अनुसार–** "सर्वेक्षण आधुनिक सामाजिक विज्ञान की शब्दावली के अनुसार एक प्रकार का व्यवस्थित प्रयास है। जिसमें कि वर्तमान सामाजिक संस्थानों के स्तर समूह तथा क्षेत्रों के संबंध में विवेचन व्याख्या आदि से सम्बंधित बातों का उल्लेख किया जाता है।"

उपरोक्त परिभाषाओं से यह निष्कर्ष निकलता हैं कि सर्वेक्षण विधि से सर्वेक्षण द्वारा सूचनाएं एवं गणनाओं को तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। इसीलिए यह विधि बहुत उपयोगी एंव महत्वपूर्ण है।

सर्वेक्षण के उद्देश्यः–

(1). सूचनाओं का संकलन करना।

(2). किसी विशिष्ट कारक का पता लगाना।

(3). किसी व्यवहार कारक का पता लगाना।

(4). दो चरों के बीच पारस्परिक सम्बंध का पता लगाना।

सर्वेक्षण विधि के सोपानः–

सर्वेक्षण को सफल बनाने के लिए उसके आयोजन के प्रमुख सोपान निम्नलिखित हैं–

1. समस्या की व्याख्या
2. उद्देश्य का निर्धारण
3. अध्ययन क्षेत्र परिभाषित करना
4. उपकरण एवं प्रविधियों का चुनाव
5. प्रतिदर्श का चयन
6. समग्र सूची का निर्माण
7. दन्त संकलन एवं विश्लेषण

सर्वेक्षण विधि की सीमाएंः–

सर्वेक्षण विधि के लाभ के साथ–साथ कुछ सीमाएँ भी हैं जो निम्न प्रकार हैं–

(1). सर्वेक्षण प्रायः असम्बद्ध एवं बिखरे होते हैं अतः इन्हे पूर्ण रूप से संकलित करके किसी सिद्धान्त का निर्माण नहीं किया जा सकता है।

(2). सर्वेक्षण विधि से समाज के एक अंश का अवलोकन हो पाता है। इससे समस्त सत्य को समझना मुश्किल है।

(3). सर्वेक्षण विधि से ऐसी सूचनाएं प्राप्त नहीं होती जिनसे तथ्यों का गहराई से अध्ययन हो सके।

(4). सर्वेक्षण में अभ्यर्थियों के गलत या सामाजिक रूप से मान्य उत्तर देने की संभावना होती है।

(5). सर्वेक्षण विधि में शोधकर्ता को अधिक सतर्क, प्रशिक्षित तथा शोध क्षेत्र का जानकार होना चाहिए।

यद्यपि सर्वेक्षण विधि में अनेक त्रुटियां व कमियां हैं फिर भी अनुसंधान के क्षेत्र में इसका अपना अलग महत्व है। अनेकानेक तात्कालिक समस्याओं पर उचित सूचना तथा तथ्य इसी के माध्यम से प्राप्त किये जा सकते हैं विभिन्न उपकल्पनाओं का सत्यापन तथा सिद्धान्तों का परीक्षण भी इस विधि द्वारा सम्भव है।

सर्वेक्षण विधि के लाभः–

सर्वेक्षण विधि के लाभ निम्नलिखित हैः–

(1). सर्वेक्षण अध्ययन वर्तमान स्थितियों स्तरों तथा समस्याओं का अध्ययन करने के लिए उपयुक्त है।

(2). सर्वेक्षण अध्ययन भावी विकास के क्रम या प्रवृत्तियों का पूर्वानुमान देता है। यह वर्तमान तथा भविष्य की आवश्यकताओं की ओर प्रभावी रूप से ध्यान आकर्षित करने की क्षमता रखते है।

(3). इन अध्ययनों के लिए वांछित उपकरण सरल तथा उपयोगी होते है। इनका प्रयोग व प्रशासन सरल होता है।

(4). आवश्यक उपकरणों के माध्यम से संग्रहित प्रदत्तों का विश्लेषण तथा व्याख्या सरल होती हैं इनसे सहज ही निष्कर्ष निकाले जा सकते है।

(5). इस प्रकार के अध्ययनों के लिए उपकरणों का विकास व निर्माण करना भी अधिक कठिन नहीं है।

3.8. उपकरणः–

किसी भी समस्या के अध्ययन हेतु नवीन एवं अज्ञात तथ्यों का संकलन करने में सहायक साधनों को शोध उपकरण कहते है। अनुसंधान हेतु अनेक उपकरणों का प्रयोग किया जाता है उपकरण के अर्थ को स्पष्ट करते हुए सुखिया एवं मल्होत्रा ने लिखा हैं–

"किसी समस्या के अध्ययन हेतु नवीन एंव अज्ञात दन्त संकलन के लिए अनेक विधियों का प्रयोग किया जाता है। प्रत्येक प्रकार के अनुसंधान के लिए नवीन दन्त संकलित करने हेतु कई यंत्रों की आवश्यकता होती हैं, इन्ही यन्त्रों को उपकरण कहते हैं।" विभिन्न उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए भिन्न–भिन्न प्रकार के उपकरण प्रस्तुत किए जाते है। अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अनुसंधानकर्ता इन उपकरणों का प्रयोग कर सकता है।

उपकरण के प्रकारः–

उपकरण दो प्रकार के होते हैंः–

1. मानकीकृत उपकरण
2. अमानकीकृत उपकरण

1. **मानकीकृत उपकरणः–** मानकीकृत उपकरण उपेक्षाकृत अधिक मान्य व वैज्ञानिक होते है। ये वे साधन हैं जिन्हें परीक्षण द्वारा मनोवैज्ञानिक शिक्षाशास्त्रीयों, अनुसंधान संस्थाओं आदि के द्वारा अनेक अन्वेषणों की सहायता से बडे समूह पर प्रशासित

किया जाता हैं और इनकी वैधता विश्वसनीयता मानाकें को ज्ञात कर लिया जाता है। इनकी प्रशासन प्रक्रिया सुनिश्चित होती है।

2. **अमानकीकृत या स्वनिर्मित उपकरणः–** अमानकीकृत उपकरणों का निर्माण शोधकर्ता द्वारा समस्या के अनुसार स्वयं अपने अनुभव संबंधित साहित्य के अध्ययन संबंधित उद्देश्यों तथा अध्यापकों के सहयोग के आधार पर करते है। इन उपकरणों के निर्माण के बाद वह उसकी विश्वसनीयता, वैधता ज्ञात करता है। तत्पश्चात् उन्हें प्रयोग में लाता है।

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री ने स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरणः–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए शोधकर्त्री द्वारा स्वनिर्मित परीक्षण बनाया गया है। जिसमें माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया गया है।

प्रश्नावलीः–

किसी भी अनुसंधान में आंकड़ो के संकलन करने में यह महत्वपूर्ण उपकरण है। इसमें अनेक प्रश्नों का समूह होता है। प्रश्नावली प्रश्नों की वह सूची हैं जो अध्ययन समस्या के संबंध में बनायी जाती हैं और जिसकी सहायता से अध्ययन इकाईयों से तथ्यों का संकलन करके अध्ययन समस्या का अध्ययन पूर्ण किया जाता है।

प्रश्नावली की परिभाषाएँः–

(1). **गुड तथा हॉट (1952) के अनुसार–** "सामान्य रूप से प्रश्नावली का अर्थ प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने की उस प्रणाली से हैं जिसमें एक पत्रक, प्रारूप या प्रपत्र का उपयोग किया जाता हैं जिसे उत्तरदाता स्वयं भरता है।"

(2). **सिन–पाओयंग (1953) के अनुसार–** "अपने सरलतम रूप में प्रश्नावली प्रश्नों की वह अनुसूची हैं जिसे कि अनुसूचित या सर्वेक्षत प्रतिदर्श के रूप में चुने हुए व्यक्तियों के पास डाक द्वारा भेजा जाता हैं। इसकी सहायता से बडे और विस्तृत लोगों के समूहों से शीघ्र और सरलता से सूचना एकत्रित की जाती है।"

(3). **वान डेलेन के अनुसार–** "प्रश्नावली एक उपकरण हैं जो शिक्षा क्षेत्र में कार्य करने वालों के द्वारा वर्तमान परिस्थितियों व क्रियाओं के बारे में तथा अभिवृत्ति व मत को जानने के लिए व्यापक रूप में प्रयोग किया जाता है।"

प्रश्नावली विधि के लाभ/आवश्यकताः–

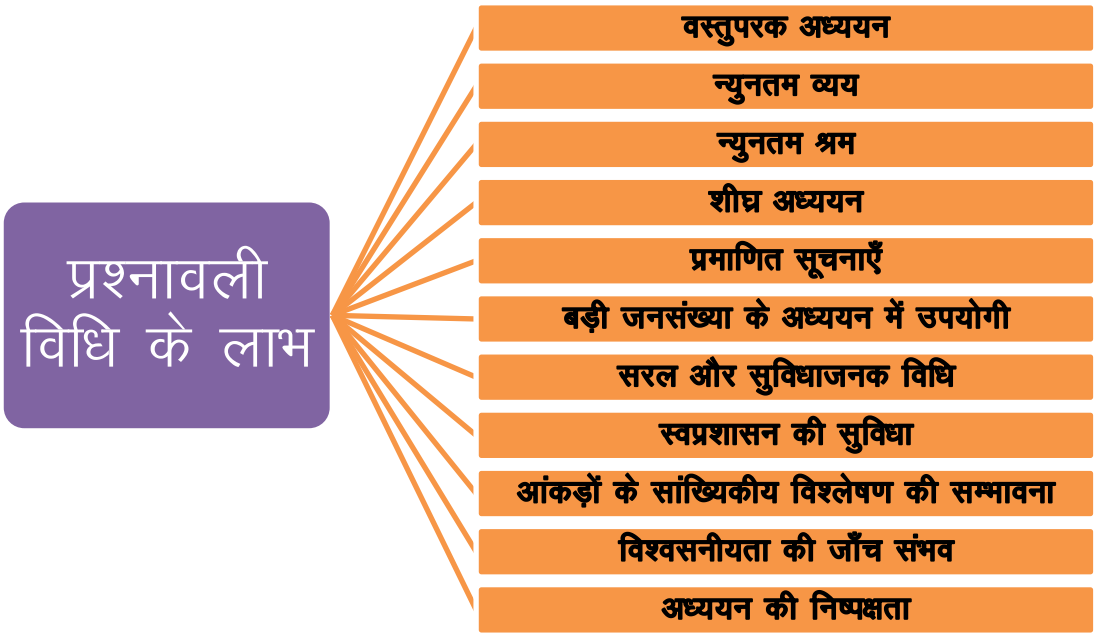

प्रश्नावली की सीमाएँः–

प्रश्नावली के लाभ होते हुए भी कुछ सीमाएं हैं जो इस प्रकार हैः–

(1). शोधकर्ता का पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण।

(2). निर्देशन के लिए अनुपयोगी।

(3). गहन व विस्तृत अध्ययन के लिए अनुपयोगी।

(4). प्रत्येक स्तर के अनुरूप प्रश्नों की रचना असम्भव।

(5). विभिन्न व्यवहारिक कठिनाईयां।

प्रशासनः–

प्रस्तुत शोध स्वच्छ भारत अभियान परीक्षण का एक प्रकार है। परीक्षण से संबंधित निर्देश परीक्षण को परीक्षण से पूर्व सभी निर्देशों को सविस्तार से समझा देना चाहिए जो कि परीक्षण में दिये गये पूरे परीक्षण को एक ही बार में पूरा करना चाहिए।

अंकनः–

स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति को प्रभावित करेन वाले कारकों की मापनी में प्रत्येक आयाम संबंधित कुल 50 प्रश्न है। प्रत्येक प्रश्न का 1 अंक है। ऋणात्मक प्रश्न में नही ंके लिए 1 अंक है और हॉ के लिए 0 अंक है तथा सकारात्मक प्रश्न में हॉ के लिए 1 अंक है और नहीं के लिए 0 अंक है। सामाजिक आयाम के सकारात्मक प्रश्न क्रमशः 16 तथा नकारात्मक प्रश्न 7, पारिवारिक आयाम के सकारात्मक प्रश्न 1 तथा नकारात्मक प्रश्न क्रमशः 2, पर्यावरणीय आयाम के सकारात्मक प्रश्न 10 तथा नकारात्मक प्रश्न 3, विद्यालय आयाम के सकारात्मक प्रश्न 9 तथा नकारात्मक प्रश्न 2 है। कुल 50 प्रश्न है प्रत्येक प्रश्न 1 अंक का है।

परीक्षण विवरणः–

प्रस्तुत लघुशोध में उपकरण स्वनिर्मित प्रश्नावली है। इस उपकरण के माध्यम से स्वच्छ भारत अभियान के प्रति शिक्षक अभिवृति मापनी में 50 प्रश्न दिये गये है। यह परीक्षण चार पृष्ठों का है। प्रथम पृष्ठ पर परीक्षण से संबंधित निर्देश दिये गये है। अन्दर के तीन पृष्ठों पर 50 प्रश्न दिये गये है। प्रत्येक पृष्ठ पर शिक्षकों से संबंधित कुछ कथन दिये गये है। जिनके सामने दो खाने ( ) बने है। प्रत्येक कथन को ध्यान से पढ़कर जिसका उत्तर हॉ के द्वारा देना चाहते है। उसके सामने (हॉ) के खाने में (√) का निशान तथा जिसका उत्तर नहीं में देना तो नहीं वाले खाने में (√) का निशान लगावे। समय की कोई सीमा नहीं है।

स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति मापनी (प्रश्नावली)

क्र. सं.	आयाम	हॉ उत्तर वाले प्रश्न क्रमांक	ना उत्तर वाले प्रश्न क्रमांक
1.	सामाजिक	3,9,12,17,19,20,21,22,24,27,28,	10,16,25,35,36,41,42
2.	पारिवारिक	5	26,29
3.	पर्यावरणीय	1,2,7,13,14,39,38,37,44,47	30,33,40
4.	विद्यालय	4,6,8,11,15,18,23,48,50	45,49

3.9. अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीः–

किसी भी सामाजिक घटना का यथा तथ्य अध्ययन करने के लिए सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया जाता है। इसके संबंध में आंकड़े एकत्रित किये

जाते हैं उनका वर्गीकरण व सारणीयन करके उन्हें सरल व्यवस्थित एवं बोधगम्य बनाने का प्रयत्न किया जाता हैं ताकि उससे निष्कर्ष निकाला जा सके।

सांख्यिकी का अर्थः–

सांख्यिकी से तात्पर्य संमकों के संग्रहण प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण तथा निर्वचन (निष्कर्ष) से हैं।

सांख्यिकी की परिभाषाः–

1. **प्रो. बाउले के अनुसारः–** "सांख्यिकी एक ऐसा शास्त्र हैं जो सामाजिक जीवन रचना की क्रियाओं का उसकी समस्त प्रवृत्तियों में अध्ययन करता है।"
2. **विलियम किंग के अनुसारः–** "सांख्यिकी संग्रहित तथ्यों के विश्लेषण अथवा अनुसार के संकलन द्वारा प्रदत्त सामूहिक या सामाजिक घटनाओं के अध्ययन करने का ढंग हैं।"

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीः–

1. मध्यमानः– मध्यमान प्राप्ताकों का केन्द्रिवर्ती मान होता हैं जो अन्य सभी बातों का प्रतिनिधित्व करता हैं। तथा पूरे समूह की विशेषताओं को बतलाता है।

सूत्रः– $\bar{X} = \frac{\sum X}{N}$

संकेताक्षर–

$\bar{X}$ = मध्यमान

$\sum X$= पदों का योग

N= पदों की संख्या

प्रामाणिक विचलन ज्ञात करने का सूत्रः–

$$S.D. = \sqrt{\frac{\sum d^2}{N}}$$

संकेताक्षरः–

S.D. = मानक विचलन

$\sum d^2$= मध्यमान से प्राप्त विचलनों के वर्गो का योग

N= पदों की संख्या

(3). 'T' (टी) मान ज्ञात करने का सूत्रः–

$$T = \frac{M1-M2}{\sqrt{\frac{(\sigma 1)^2}{N1} + \frac{(\sigma 2)^2}{N2}}}$$

M_1= प्रथम समूह का विचलन

M_2= द्वितीय समूह का विचलन

N_1= प्रथम समूह की संख्या

N_2= द्वितीय समूह की संख्या

σ_1= प्रथम समूह का प्रामाणित विचलन

σ_2= द्वितीय समूह का प्रमाणित विचलन

चतुर्थ अध्याय

प्रदत्तों का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या

चतुर्थ अध्याय शोध अध्ययन का हृदय होता है। आँकड़ों का वर्गीकरण एवं सारणीयन की सहायता से उनका विश्लेषण कर नवीन तथ्यों को प्रस्तुत किया जाता है।

चतुर्थ अध्याय

प्रदत्तों का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 प्रस्तावनाः–

अनुसंधान में संकलित तथ्यों को वैज्ञानिक ढंग से एक सारणी के अन्तर्गत प्रदर्शित करना ही सारणीयन है। सारणीयन में अंको से प्राप्त होने वाली सूचनाएं स्पष्ट होती है। समस्या की व्याख्या उचित व स्पष्ट होती है तथा आंकड़ों से यथोचित निष्कर्ष निकाले जा सकते है। यहां तक कि इसके द्वारा गुणात्मक रूप में प्रस्तुत करने की एक प्रणाली है। यह संकलित तथ्यों को बोधगम्य व व्यवस्थित बनाती है।

4.2 सारणीयनः–

समकों के वर्गीकरण के पश्चात् उन्हें सही रूप में समझने के लिए समकों की सारणी बनायी जाती है। इससे अध्ययन में सुगमता बाती है।

4.3 सारणीयन का अर्थ व परिभाषाः–

वर्गीकरण के पश्चात् सांख्यिकी सामग्री को सारणियों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रकार वर्गीकरण सारणीयन का आधार है। जैसा वर्गीकरण होता है। उसी के अनुरूप सारणीयन भी करना पड़ता है। यदि वर्गीकरण बहुमुखी तथा जटिल है तो सारणी वैसी होगी। सारणीयन द्वारा एकत्रित सामग्री को सरल, संक्षिप्त तथा सुबोध बनाया जाता है।

1. **एल्हंस के अनुसारः–**

"विस्तृत अर्थ में सारणीयन तथ्यों की स्तम्भों तथा पंक्तियों में क्रमबद्ध रूप में व्यवस्थित करता है।"

2. **सपट के अनुसारः–**

"एक सांख्यिकी सारणी में संबंधित तथ्यों का उदग्र रवानों तथा समतल पंक्तियों में किया गया वर्गीकरण है"

3. **कॉनर के अनुसारः–**

"सारणीयन किसी विचाराधीन समस्य को स्पष्ट करने के उद्धेश्य से किया जाने वाला सांख्यिकीय का क्रमबद्ध एवं सुव्यवस्थित प्रस्तुतीकरण है"

4.4 सारणीयन के उद्धेश्यः–

1. तथ्यों को संक्षिप्त रूप प्रदान करना।
2. तथ्यों को तुलनीय बनाना।
3. तथ्यों को स्पष्ट तथा बोधगम्य बनाना।
4. सांख्यिकी विवेचना में सहायक।
5. विशेषताओं का प्रदर्शन करना।

4.5 सारणीयन के गुणः–

1. **आकर्षकताः–**

एक सारणी के आकर्षक होने के लिए उसके खानों का समानुपातिक होना, सांख्यिकी के लिखने का ढंग, स्वच्छता तथा लेख की सुन्दरता आदि आवश्यक तत्व है।

2. **समुचित प्रकारः–**

एक स्तरीय सारणी का आकासर समुचित होना चाहिए। आकार न बड़ा न अधिक छोटा होना चाहिए।

3. **स्पष्टता तथा सरलताः–**

एक उत्तम सारणी का स्पष्ट तथा सरल होना परम आवश्यक है। जिससे समकों को तुरन्त खोज सके।

4. **तुलना की सुविधाएंः–**

एक उच्च स्तर की सारणी में तथ्यों को इन प्रकार व्यवस्थित रूप से प्रर्दशित किया जाना चाहिए।

4.6 सारणीयन की सीमाएंः–

1. सारणियों में मात्र समंक होते है उनका विवरण नहीं होता है। अतः उन्हीं तथ्यों से सांख्यिकीय विवेचन नहीं किया जा सकता है।
2. सारणियों को समझने के लिए अंकों का उच्च ज्ञान होना आवश्यक है। इसलिए साधारण ज्ञान रखने वालों के लिए सारणी के अंको के मेल को समझना बहुत कठिन है।

अतः प्रत्येक परिकल्परना को ध्यान में रखते हुए विभिन्न तथ्यों को सारणीबद्ध किया है। तत्पश्चात् उसकी व्याख्या एवं विश्लेषण किया गया है।

परिकल्पना–1 का परीक्षण

तालिका संख्या–4.1

माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों तथा सरकारी विद्यालयें के शिक्षक स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर नहीं पाया जाता है।

क्र. सं.	समूह	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	टी–मूल्य (t)	सार्थकता का स्तर	
						0.05 पर	0.01 पर
1.	निजी शिक्षक	30	41.57	5.23	0.71	स्वीकृत	स्वीकृत
2.	सरकारी शिक्षक	30	40.7	4.13			

$df = (N_1 + N_2 - 2)$ $df = (30 + 30 - 2) = 58$

df = 58 के लिए t का अपेक्षित मान 0.05 स्तर पर मान 2.00

0.01 स्तर पर मान 2.66

माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों तथा सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति का आरेख–

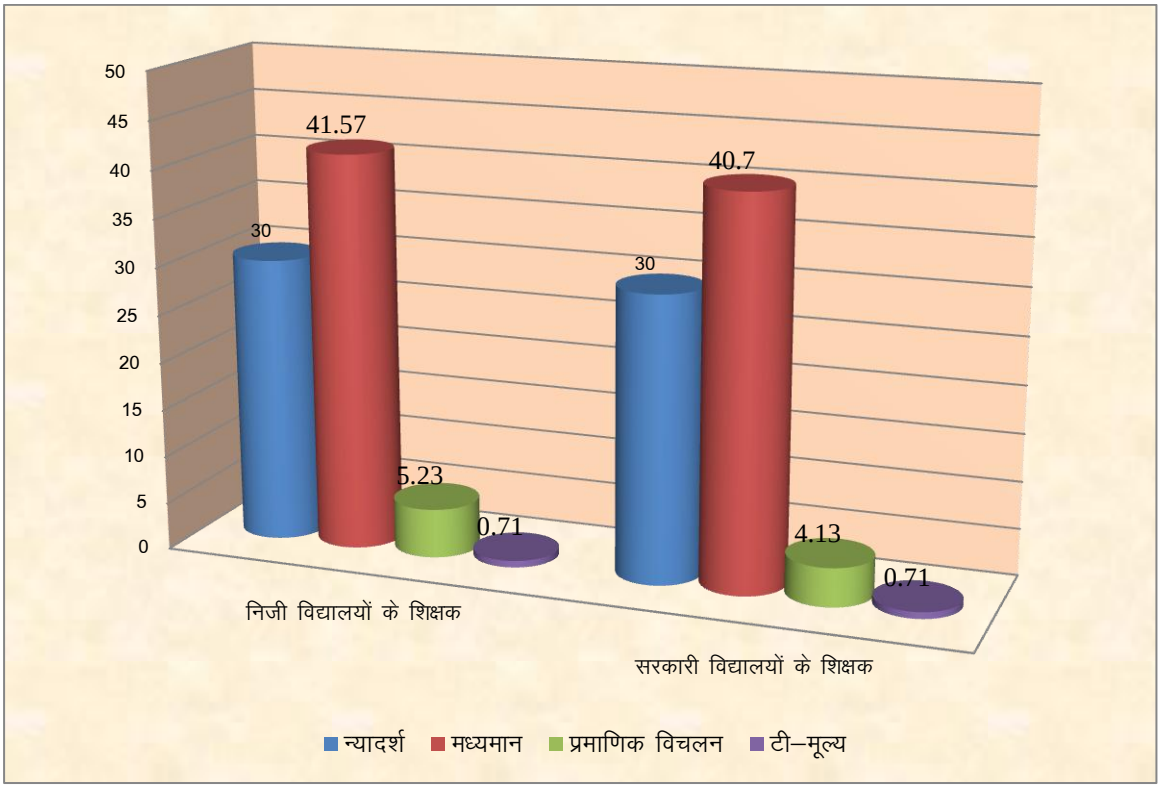

विश्लेषणः–

तालिका 4.1 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर निजी विद्यालयों तथा सरकारी विद्यालयों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति मध्यमान क्रमशः 41.57 एवं 40.7 प्रमाणिक विचलन 5.23 एवं 4.13 तथा t का मान 0.71 प्राप्त हुआ है। df 58 के लिए t का अपेक्षित मान 0.05 स्तर पर 2.00 तथा 0.01 पर 2.66 है जबकि प्राप्त t का मूल्य 0.71 है। यह सार्थकता के दोनों स्तरों से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है कि माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों तथा सरकारी विद्यालयों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर नहीं पाया गया हे। अतः परिकल्पना स्वीकृत है।

तालिका संख्या–4.2

सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों एवं महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर नहीं पाया जाता है।

क्र. सं.	समूह	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	टी–मूल्य (t)	सार्थकता का स्तर	
						0.05 पर	0.01 पर
1.	पुरूष अध्यापक	15	41.07	4.71	0.27	स्वीकृत	स्वीकृत
2.	महिला अध्यापिका	15	40.67	3.15			

df = (N1 + N2 - 2) df = (15 + 15 - 2) = 28

df = 28 के लिए t का अपेक्षित मान 0.05 स्तर पर मान 2.05

0.01 स्तर पर मान 2.76

सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों एवं महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति का आरेख–

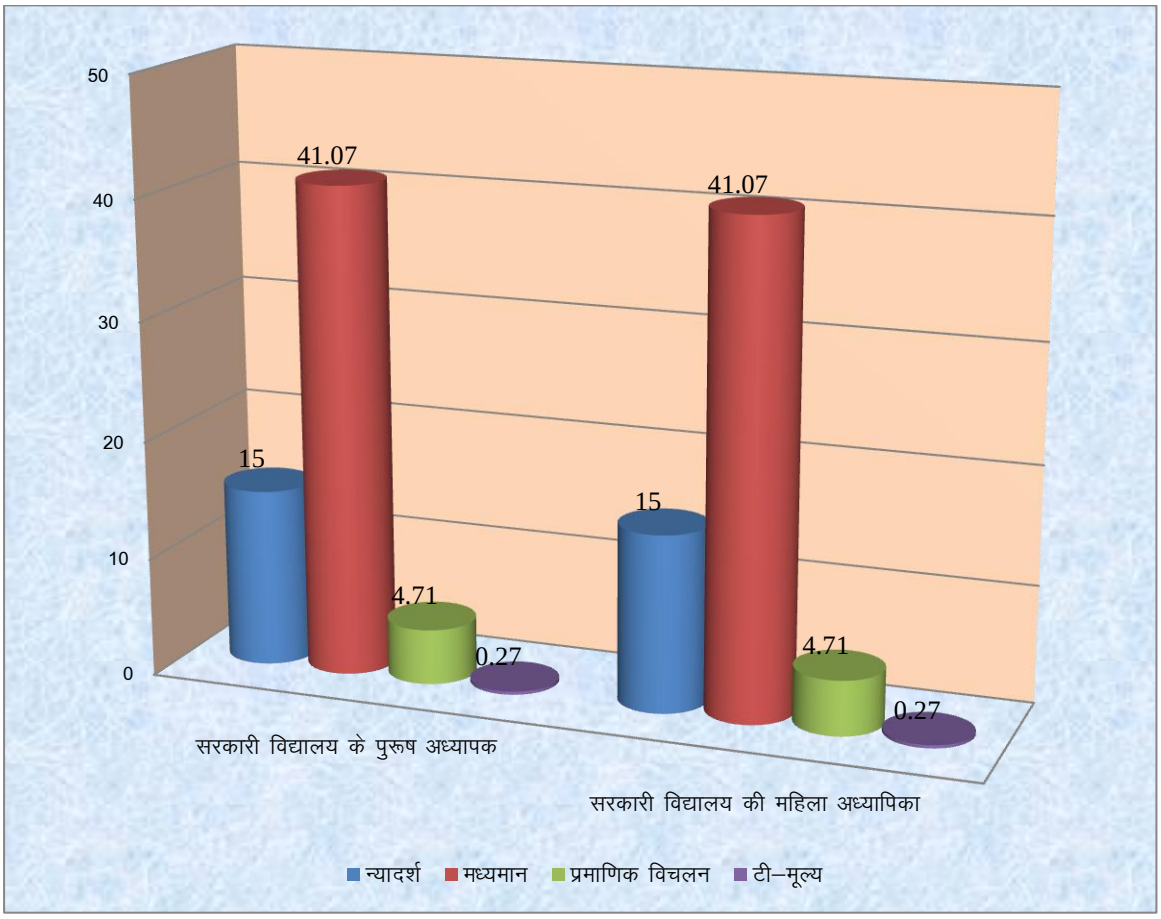

विश्लेषणः–

तालिका 4.2 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों एवं महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति मध्यमान क्रमशः 41.07 एवं 40.67 प्रमाणिक विचलन 4.71 एवं 3.15 तथा t का मान 0.27 प्राप्त हुआ है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि इस परिकल्पना के अनुसार सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों एवं महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर नहीं पाया गया है। अतः परिकल्पना स्वीकृत है।

तालिका संख्या–4.3

सरकारी एवं निजी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर नहीं पाया जाता है।

क्र. सं.	समूह	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	टी–मूल्य (t)	सार्थकता का स्तर	
						0.05 पर	0.01 पर
1.	सरकारी पुरूष अध्यापक	15	40.67	4.71	1.34	स्वीकृत	स्वीकृत
2.	निजी पुरूष अध्यापक	15	43	4.82			

df = (N1 + N2 - 2)

df = (15 + 15 - 2) = 28

df = 28 के लिए t का अपेक्षित मान

0.05 स्तर पर मान 2.05

0.01 स्तर पर मान 2.76

सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों एवं महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति का आरेख–

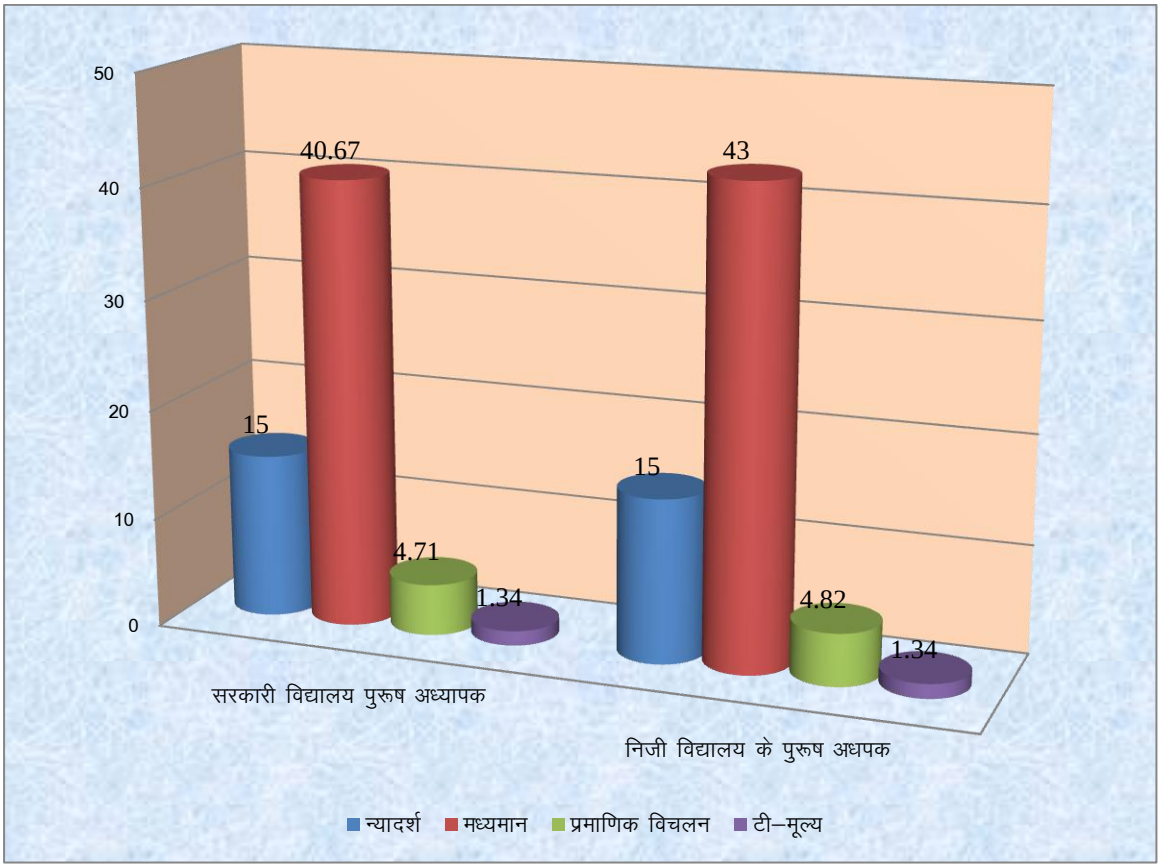

विश्लेषणः–

तालिका 4.3 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि सरकारी एवं निजी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति मध्यमान क्रमशः 40.67 एवं 43, प्रमाणिक विचलन 4.71 एवं 4.82 तथा t का मान 1.34 प्राप्त हुआ है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि इस परिकल्पना के अनुसार सरकारी एवं निजी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर नहीं पाया गया है। अतः परिकल्पना स्वीकृत है।

तालिका संख्या–4.4

सरकारी एवं निजी विद्यालयों की महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर नहीं पाया जाता है।

क्र. सं.	समूह	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	टी–मूल्य (t)	सार्थकता का स्तर	
						0.05 पर	0.01 पर
1.	सरकारी महिला अध्यापिका	15	41.07	3.15	2.56	स्वीकृत	अस्वीकृत
2.	निजी महिला अध्यापिका	15	44.66	4.44			

df = (N1 + N2 - 2)

df = (15 + 15 - 2) = 28

df = 28 के लिए t का अपेक्षित मान

0.05 स्तर पर मान– 2.05

0.01 स्तर पर मान– 2.76

सरकारी एवं निजी विद्यालयों की महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति का आरेख–

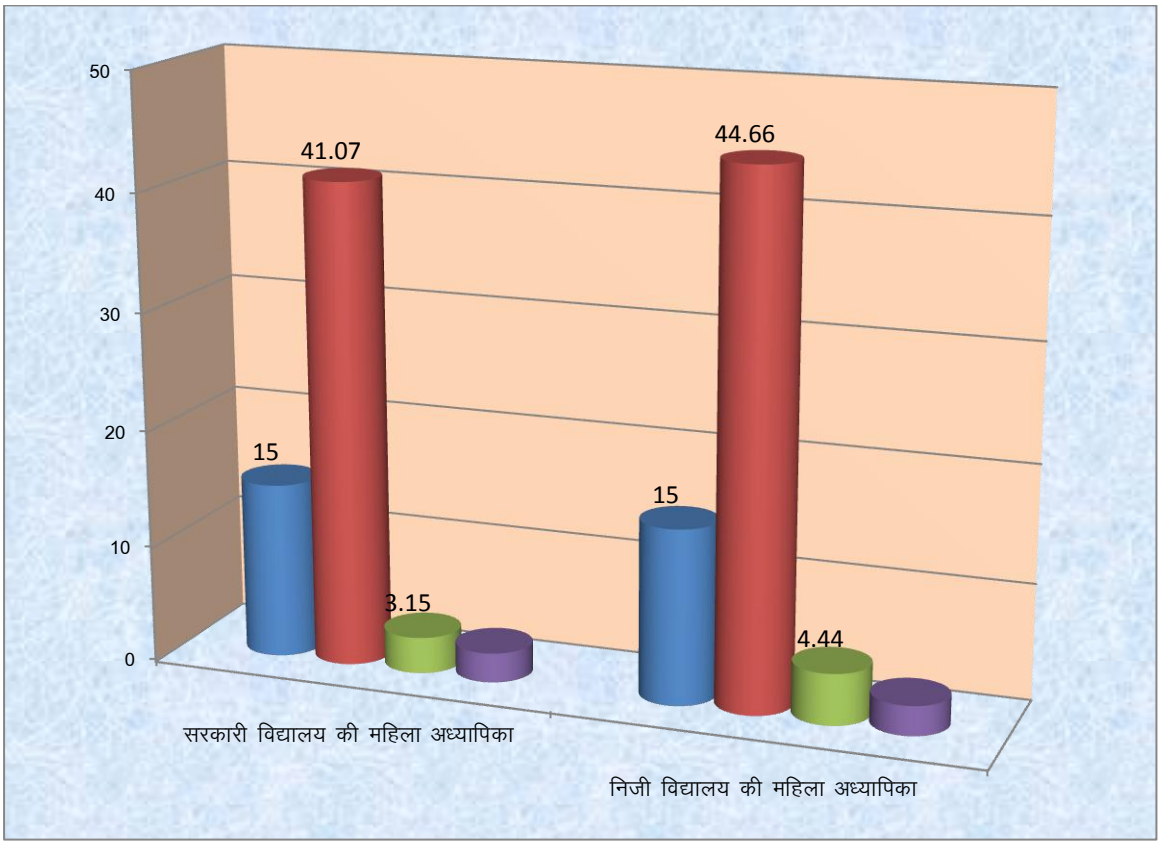

विश्लेषणः–

तालिका 4.4 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि सरकारी एवं निजी विद्यालयों की महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति मध्यमान क्रमशः 41.07 एवं 44.66, प्रमाणिक विचलन 3.15 एवं 4.82 तथा t का मान 2.56 प्राप्त हुआ है।

निष्कर्षः–

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि इस परिकल्पना के अनुसार सरकारी एवं निजी विद्यालयों की महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर नहीं पाया गया है। अतः 0.05 स्तर पर परिकल्पना स्वीकृत है परन्तु 0.01 स्तर पर परिकल्पना अस्वीकृत है।

तालिका संख्या–4.5

सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापक एंव निजी विद्यालय की महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर नहीं पाया जाता है।

क्र. सं.	समूह	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	टी–मूल्य (t)	सार्थकता का स्तर	
						0.05 पर	0.01 पर
1.	सरकारी विद्यालय के पुरूष अध्यापक	15	40.67	4.71	2.39	स्वीकृत	अस्वीकृत
2.	निजी विद्यालय की महिला अध्यापिका	15	44.66	4.44			

df = (N1 + N2 - 2)

df = (15 + 15 - 2) = 28

df = 28 के लिए t का अपेक्षित मान

0.05 स्तर पर मान 2.05

0.01 स्तर पर मान 2.76

सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापक एंव निजी विद्यालय की महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति का आरेख–

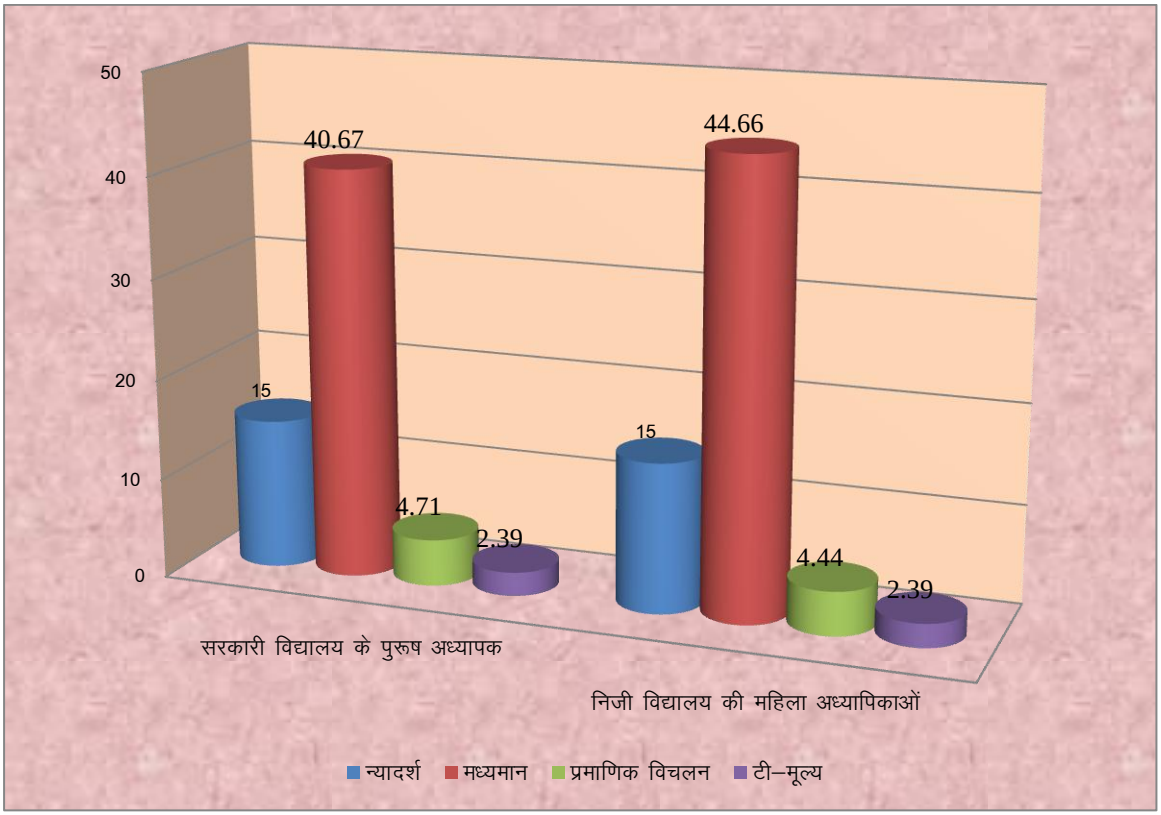

विश्लेषणः–

तालिका 4.5 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापक एंव निजी विद्यालय की महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति मध्यमान क्रमशः 40.67 एवं 44.66, प्रमाणिक विचलन 4.71 एवं 4. 44 तथा t का मान 2.39 प्राप्त हुआ है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि इस परिकल्पना के अनुसार सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापक एंव निजी विद्यालय की महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। अतः 0.05 स्तर पर परिकल्पना स्वीकृत है परन्तु 0.01 स्तर पर परिकल्पना अस्वीकृत है।

पंचम अध्याय

शोध सार एवं भावी शोध हेतु सुझाव

पंचम अध्याय के रूप में शोध सार किसी भी अध्ययन का सर्वाधिक उपयोगी भाग होता है। सम्पूर्ण शोध अध्ययन का संक्षिप्त परिचय कराने के कारण इसे ही सर्वाधिक पढ़ा जाता है। अधिकांश अध्येता शोध अध्ययन को समग्र सिंहावलोकन, करने एवं इसकी उपयोगिता को समझने के लिए सर्वप्रथम शोध सार का ही अध्ययन करते है।

अध्याय पंचम

शोध सार एवं भावी शोध हेतु सुझाव

5.1 प्रस्तावना

मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है। इसलिए उसके प्रत्येक कार्य के पीछे कुछ ना कुछ उद्देश्य अवश्य होता है। प्रस्तुत अध्ययन के भी कुछ उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है परन्तु इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य स्वच्छ भारत अभियान के प्रति माध्यमिक स्तर के विद्यालयी शिक्षकों की अभिवृत्ति का मापन करना है।

वर्तमान समय में जब भी भारत के सन्दर्भ में स्वच्छता का जिक्र किया जाता है तो मस्तिष्क में एक ऐसे भारत की छवि उभरती है जो कहने में तो विश्व शक्ति बनकर उभर रहा है परन्तु जहाँ आज भी स्वच्छता एक अधूरा सपना प्रतीत होता है। स्वच्छता की दृष्टि से साधन सम्पन्न होते हुए भी भारत विश्व में पिछड़ा हुआ है। स्वच्छता एवं साफ–सफाई के प्रति जागरूकता सृजित कर देश को गंदगी मुक्त बनाने के लिए राष्ट्रव्यापी स्वच्छ भारत अभियान का शुभारम्भ 2 अक्टूबर, 2014 को राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के जन्म दिवस पर हुआ। महात्मा गाँधी एक सरल, सहज व्यक्तित्व जिन्होंने स्वच्छता को देवत्व के तुल्य माना। उनके लिये स्वच्छता का अभिप्राय तन से नहीं अपितु मन से सम्पूर्ण राष्ट्र की स्वच्छता से था। परन्तु अफसोस रहा कि महात्मा गाँधी ने जिन राष्ट्रवासियों को स्वतन्त्र भारत का उपहार दिया उन्हीं राष्ट्रवासियों ने भारत को अस्वच्छता रूपी कलंक से अभिशापित कर दिया। महात्मा गाँधी के सपने को साकार करने हेतु स्वच्छ भारत अभियान को एक

मुहिम रूप में सामने लाने का श्रेय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को जाता है। इसी अभियान को गतिशीलता प्रदान करने हेतु समाज का हर अभिकरण जुड़ गया है।

इस अभियान का मुख्य उद्देश्य स्वच्छ, सुन्दर भारतवर्ष का निर्माण करना है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की पुण्यतिथि 30 जनवरी को (शहीदी दिवस) स्वच्छता दिवस मानने की घोषणा की गयी है। स्वच्छ भारत अभियान की बागडोर फिल्म जगत, दूरदर्शन, सिनेमा, विद्यालय, आम नागरिक संभाले हैं। ऐसे में विद्यालय की एक सकारात्मक भूमिका है। विद्यालय शिक्षक, छात्रों ने इस अभियान के प्रति अभिवृत्ति को उच्चतम स्तर तक दर्शाया है।

अत स्वच्छता अभियान के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति बहुत मायने रखती है। अध्यापक बालक के जीवन को नव दिशा प्रदान करता है। अध्यापक से प्रभावित होकर ही छात्र जीवन पथ की सभी बाधाओं से लड़ता हुआ आगे बढ़ता है। स्वच्छता रखने की आदत बालक में बचपन से ही विद्यालय तथा परिवार से मजबूत होती है। अत स्वच्छ भारत अभियान को गतिशीलता शिक्षक की सकारात्मक अभिवृत्ति से प्राप्त होगी। अत स्वच्छता अभियान से सम्बन्धित निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों से स्वच्छ भारत अभियान अभिवृत्ति मापनी भरवाकर उनके सांख्यिकीय विधियों द्वारा परिणाम ज्ञात किये गये। इन परिणामों के आधार पर यह अवलोकित किया गया कि उन उद्देश्यों की पूर्ति में कहाँ तक सफलता मिली है जो इस अध्ययन का मुख्य आधार कही जा सकती है। अत प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति का पता लगाना था।

5.2 समस्या कथन

''माध्यमिक स्तर के विद्यालयी शिक्षकों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।''

5.3 शोध के उद्देश्यः–

किसी भी समस्या पर शोध करने से पहले उद्धेश्यों का निर्धारण करना अति आवश्यक है क्योंकि बिना उद्धेश्यों किसी भी कार्य को करना समुचय रेत की दीवार बनाने के समान है।

जैसा कि संस्कृत में कहा है

1. माध्यमिक स्तर के निजी तथा सरकारी विद्यालयी शिक्षकों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों एवं महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ अभियान के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के निजी तथा सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों की स्वच्छ अभियान के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर के निजी तथा सरकारी विद्यालयों के महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ अभियान के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।
5. माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों तथा निजी विद्यालय की महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ अभियान के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।

5.4 अध्ययन से संबंधित परिकल्पनाएँ–

1. माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों तथा सरकारी विद्यालयों शिक्षकों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों एवं महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
3. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
4. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
5. माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों एवं निजी विद्यालयों की महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

5.5 जनसंख्याः–

जयपुर जिले के राजकीय एवं निजी माध्यमिक शिक्षकों का चयन जनसंख्या के रूप में किया गया।

5.6 न्यादर्शः–

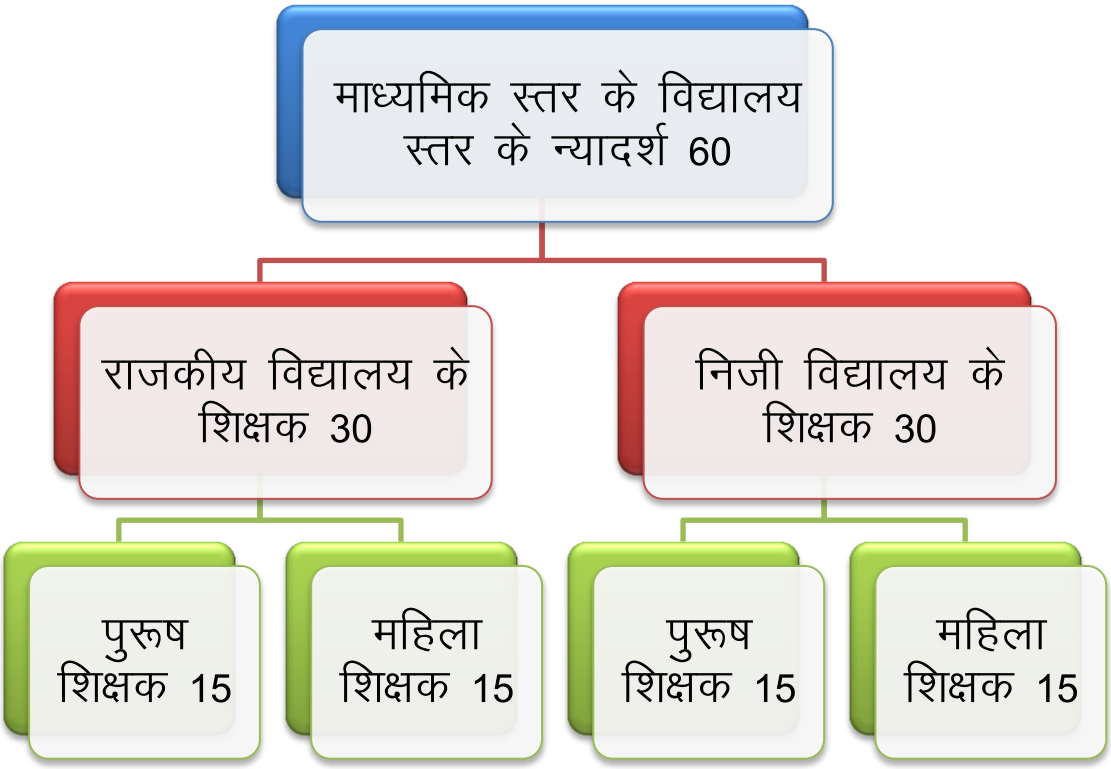

5.7 शोध विधिः–

प्रस्तुत अध्ययन में शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

5.8 उपकरणः–

प्रस्तुत अध्ययन में अप्रमापीकृत स्वनिर्मित प्रश्नावली (स्वच्छ भारत अभियान अध्यापक अभिवृति मापनी) का प्रयोग किया।

5.9 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी :-

- मध्यमान
- प्रमाणिक विचलन (SD)
- टी– मान (T Test)

5.10 शोध कार्य के चरः-

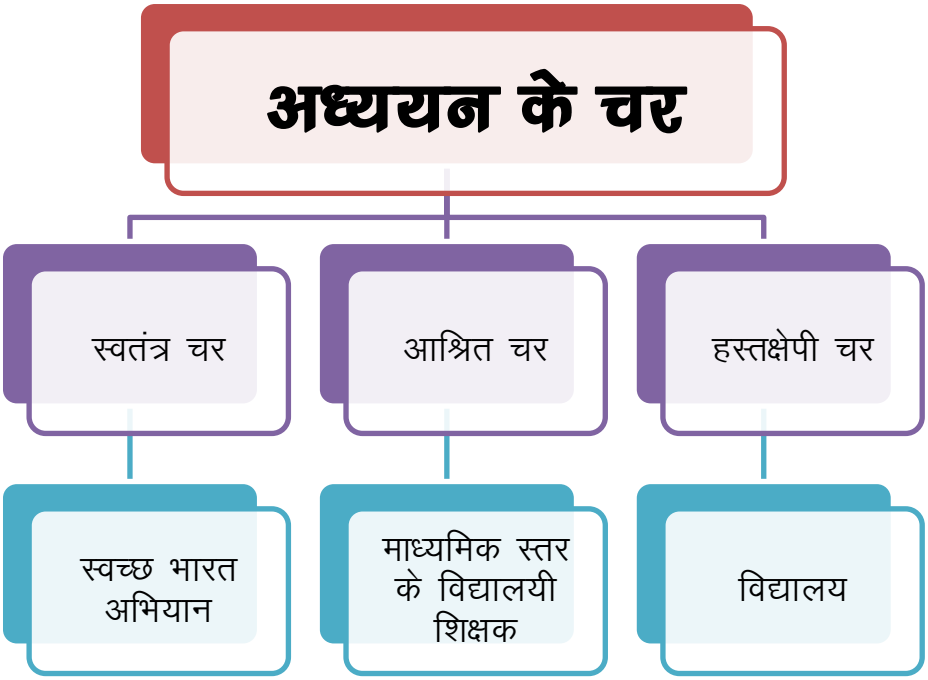

5.11 परिसीमनः–

1. यह अध्ययन राजस्थान के जयपुर जिले के माध्यमिक स्तर के शिक्षकों तक सीमित है।
2. यह अध्ययन माध्यमिक स्तर के निजी तथा राजकीय विद्यालयी शिक्षकों तक सीमित है।
3. इस अध्ययन के लिए माध्यमिक स्त्र के 60 विद्यालयी शिक्षकों का चयन किया गया।
4. प्रस्तुत लघु शोध में महिला तथा पुरूष शिक्षकों का चयन किया गया है।

5.12 शोध के परिणाम एवं निष्कर्षः–

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंधन शिक्षकों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति से संबंधित कारकों का विश्लेषणात्मक से संबंधित है। अध्याय चार के अन्तर्गत संग्रहित तथ्यों का सांख्यिकीय विधियों से विश्लेषण किया और उसके आधार पर विभिन्न प्रकार के तथ्य सामने आये और परिकल्पनाओं की जांच की गई इसके आधार पर निष्कर्ष पाये गये।

परिकल्पना संख्या 1

माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों तथा सरकारी विद्यालयी शिक्षकों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। निष्कर्ष के रूप में परिकल्पना स्वीकृत होती है। दोनों समूहों के मध्यमानों को देखने के उपरान्त यह निष्कर्ष पाया गया कि निजी विद्यालयों के शिक्षकों का मध्यमान

सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के मध्यमान से अधिक है। लेकिन यह अन्तर सार्थक नहीं पाया गया।

परिकल्पना संख्या 2

सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों एवं महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। निष्कर्ष के रूप में परिकल्पना स्वीकृत होती है। दोनों समूहों के मध्यमानों को देखने से यह निष्कर्ष निकलता है कि सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों का मध्यमान सरकारी विद्यालयों की महिला अध्यापिकाओं के मध्यमान से अधिक है। लेकिन यह अन्तर सार्थक नहीं पाया गया।

परिकल्पना संख्या 3

सरकारी एवं निजी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। निष्कर्ष के रूप में परिकल्पना स्वीकृत होती है। दोनों समूहों के मध्यमानों को देखने के उपरान्त यह निष्कर्ष निकलता है कि सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों का मध्यमान निजी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों के मध्यमान से कम है। अर्थात् सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

परिकल्पना संख्या 4

सरकारी एवं निजी विद्यालयों की महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। निष्कर्ष के रूप में परिकल्पना स्वीकृत होती है। दोनों समूहों के मध्यमानों को देखने के उपरान्त यह

निष्कर्ष निकलता है कि सरकारी विद्यालयों की महिला अध्यापिकाओं का मध्यमान निजी विद्यालयों की महिला अध्यापिकाओं के मध्यमान से कम है। अर्थात् सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

परिकल्पना संख्या 5

सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापक एवं निजी विद्यालय की महिला अध्यापिकाओं की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। निष्कर्ष के रूप में परिकल्पना स्वीकृत होती है। दोनों समूहों के मध्यमानों को देखने के उपरान्त यह निष्कर्ष निकलता है कि सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों का मध्यमान निजी विद्यालयों की महिला अध्यापिकाओं के मध्यमान से कम है। अर्थात् सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

5.13 शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थः–

प्रस्तुत शोध कार्य सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति जानने का लघु प्रयास है। शोध कार्य के परिणामों का निष्कर्ष है कि तुलनात्मक दृष्टि से अधिकांश परिस्थितियों में स्वच्छता के प्रति अभिवृति का स्तर निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों से उच्चतर है। इसका मुख्य कारण शोध कार्य के दौरान शिक्षकों से अन्त क्रिया करने पर प्राप्त हुआ कि स्वच्छता अभियान के प्रति सरकारी क्षेत्र का प्रबन्धन पक्ष विशेष ध्यान नहीं देता है। स्वच्छता अभियान को शिक्षकों पर एक कार्यभार की तरह लाद दिया गया है तथा अधिकांशत शिक्षकों को

खानापूर्ति की तरह स्वच्छता दिवस का आयोजन करने को विवश किया जा रहा है। इसके विपरीत निजी अध्यापकों की अभिवृति उच्चतम स्तर की है।

शोधकार्य के दौरान शिक्षकों से वार्ता करने पर पता चला कि विद्यालय में स्वच्छता रखने का हर संभव प्रयास किया जा रहा है। विद्यालयों में स्वच्छता अभियान के तहत शिक्षकों से सहयोग भी लिया जा रहा है।

अतः निष्कर्ष रूप कहा जा सकता है कि स्वच्छता अभियान को यदि शिक्षा जगत में गम्भीरता के साथ आगे बढ़ने का प्रयास किया जायेगा।

5.14 भावी शोध हेतु सुझावः–

1. प्रस्तुत अध्ययन में केवल स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अध्यापक अभिवृति का ही अध्ययन किया गया है। जबकि स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरूकता एवं शिक्षण संस्थाओं में स्वच्छता स्तर का आंकलन इत्यादि प्रकरणों का भी अध्ययन किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोधकार्य माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों तक ही सीमित है जबकि यह शोध कार्य उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों पर भी किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श 60 लिया गया है जबकि भावी शोधकार्य विस्तृत न्यादर्श लेकर किया जा सकता है।
4. न्यादर्श के स्वरूप के आधार पर अन्य सांख्यिकी का प्रयोग किया जा सकता है।
5. प्रस्तुत शोध में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति का अध्ययन केवल शिक्षकों के संदर्भ में ही किया गया है। इसके अतिरिक्त अन्य व्यवसायों में

कार्यरत कर्मचारियों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति का अध्ययन किया जा सकता है।

6. सांख्यिकी में एक अनुपात का प्रयोग किया जा सकता है। जिसमें समूहों की संख्या दो या तीन से अधिक रखी जा सकती है।

7. राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र आदि राज्यों के अध्यापकों की स्वच्छ अभियान के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

5.15 उपसंहार

प्रस्तुत शोधकार्य शिक्षकों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति के स्तर से सम्बन्धित है। शिक्षक ही इस राष्ट्र के भाग्यविधाता है। शिक्षक यदि स्वच्छता अभियान को गम्भीरता से लेते हुए अपना शत–प्रतिशत योगदान प्रदान करेंगे तो वो दिन दूर नहीं है जब 2019 के स्वर्ण वर्ष महात्मा गाँधी की जयन्ती 2 अक्टूबर के दिन बापू को हम एक स्वच्छ भारत समर्पित करेंगे।

स्वच्छ भारत अभियान के प्रति शिक्षकों ने उच्चतम सकारात्मक अभिवृत्ति प्रदर्शित की है। शिक्षकों की इसी अभिवृत्ति को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री कुछ सुझाव प्रेषित कर रही है। यदि उन्हें ध्यान में रखा जाये तो स्वच्छता अभियान की सफलता निश्चित रूप से सम्भव है –

- स्वच्छ भारत अभियान के तहत विद्यालयों में हो रहे स्वच्छता कार्यक्रमों को एक लघु फिल्म के रूप में मीडिया के साधनों द्वारा नियमित रूप से प्रसारित करना चाहिए।

- हर पंचायत या तहसील, वार्ड स्तर पर श्रेष्ठ स्वच्छता रखने वाले विद्यालय को पुरस्कृत करना चाहिए।
- विद्यालय स्तर पर स्वच्छता अभियान के तहत सर्वश्रेष्ठ योगदान प्रदान करने वाले शिक्षकों को प्रोत्साहन प्रदान करना चाहिए।
- विद्यालयों में शिक्षकों तथा विद्यार्थियों की एक समिति बनानी चाहिए जो स्वच्छ भारत अभियान कमेटी नाम से संचालित की जानी चाहिए जिसका कार्यक्षेत्र विद्यालय तथा आस–पास के इलाके की स्वच्छता से सम्बन्धित होना चाहिए।
- शिक्षकों को हर संभव योगदान स्वच्छ भारत अभियान के सफल होने के लिए प्रदान करना चाहिए।

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि स्वच्छ भारत अभियान की सफलता शिक्षकों, विद्यालय प्रबन्धन के मिले–जुले प्रयासों से सम्भव है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

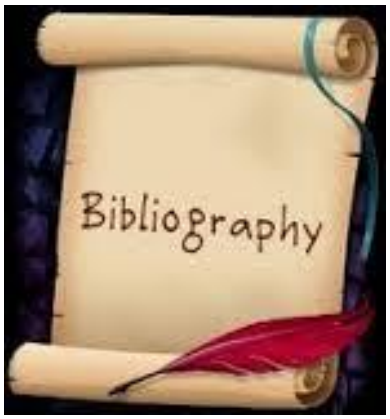

पुस्तकें

- **अग्रवाल जे.सी. (2005)** : शिक्षा मनोविज्ञान. आगरा, विजय प्रकाशन मन्दिर.
- **अग्निहोत्री रवीन्द्र (2000)** : आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्या व समाधान. जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.
- **आर्य सत्यदेव (1993)** : स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा. आगरा, राधा प्रकाशन मन्दिर.
- **अस्थाना एवं अस्थाना (2005)** : मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन. आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर.
- **भटनागर सुरेश (2004)** : बाल विकास एवं बाल मनोविज्ञान. मेरठ, सूर्या पब्लिकेशन.
- **चौबे सरयू प्रसाद (2002)** : स्वच्छता एवं शारीरिक स्वास्थ्य, नई दिल्ली, कन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी.
- **चार्टर वी.गुड (1993)** : अनुसंधान परिचय. आगरा, चावला एण्ड सन्स.

- **गोयल पी.आर. (2003)** : स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा. जयपुर राजस्थान बुक डिस्ट्रीब्यूटर.
- **कपिल एच.के. (2000)** : सांख्यिकी के मूल तत्व. आगरा, एच.पी. भार्गव बुक हाउस.
- **मिश्रा एम.कुमार (2006)** : किशोर मनोविज्ञान. जयपुर, युनिवर्सिटी बुक हाउस.
- **मंगल एस.के. (2008)** : शैक्षिक अनुसंधान एवं विधियाँ. नई दिल्ली, प्रिन्टिंग हॉल ऑफ इण्डिया.
- **पाठक पी.डी (2000)** : स्वास्थ्य शिक्षा. आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर.
- **पाल आर.एस. (1997)** : स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा. आगरा, आराधना प्रकाशन.
- **पचौरी गिरीश (2004)** : शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी. मेरठ, लॉयल बुक डिपो.
- **राय पारसनाथ एवं अग्रवाल लक्ष्मीनारायण (2007)** : अनुसंधान परिचय. आगरा, विनोद पब्लिकेशन.
- **शर्मा आर.ए. (2000)** : शिक्षा अनुसंधान. मेरठ, आर.लाल. बुक डिपो.
- **शर्मा आर.एस. (2005)** : शैक्षिक अनुसंधान. मेरठ, कमल बुक डिपो.
- **शर्मा वीरेन्द्र प्रकाश (2006)** : रिसर्च मेथेडॉलोजी. जयपुर, पंचशील प्रकाशन.
- **सरीन एवं सरीन (2007)** : शैक्षिक अनुसंधान एवं विधियाँ, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर.

- **सुखिया एस.पी. (2002)** : शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व. आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर.
- **सिंह राजेन्द्र (2000)** : स्वास्थ्य शिक्षा का महत्व. नई दिल्ली, धनपतराय एण्ड पब्लिकेशन.
- **सिंह बी.एन. (1999)** : स्वास्थ्य शिक्षा. पटना, नवदीप पब्लिकेशन.
- **श्रीवास्तव डी.एन. (2006)** : अनुसंधान विधियाँ. आगरा, साहित्य प्रकाशन.
- **शर्मा एल.एन. (1999)** : हैल्थ एण्ड हाईजीन. नई दिल्ली, धनपतराय एण्ड पब्लिकेशन.
- **वर्मा प्रीति सिंह (2005)** : मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी. आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर.

अप्रकाशित शोध ग्रन्थ सूची

❖ **धनशेखर, जी. (1994)** ''एटेम्प्ट टू स्टडी द अवेयरनेस ऑफ प्राईमरी एण्ड मिडिल स्कूल टीचर्स रिगार्डिंग हैल्थ एण्ड क्लीनिनेस अमोंग द स्कूल चिल्ड्रन'' एम.फिल. हेतु, मदुरई विश्वविद्यालय

❖ **दत्ता आर.एस. (1995) :** विद्यालयों में स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने वाले अध्यापकों के दृष्टिकोण का अध्ययन''एम.एड. हेतु, कलकत्ता विश्वविद्यालय

❖ **भण्डाकर, के.एम. (1996) :** ''माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों व छात्रों का विद्यालयी स्वच्छता के प्रति ज्ञान व अभिवृत्ति का अध्ययन'' पी.एच.डी. स्तर हेतु, गुजरात विश्वविद्यालय

❖ **माथुर एस. (1997) :** ''शिक्षकों की सृजनात्मक अधिगम तथा स्वच्छता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन'' पी.एच.डी. स्तर हेतु, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय

❖ **मिश्रा पी. (2002) :** ''पॉपूलेशन एजूकेशन'' ए जिओ एन्वायरमेन्टल स्टडी (विद स्पेशल रेफरेन्स टू चित्रकूट मण्डल)'' पी.एच.डी. स्तर हेतु, पटना विश्वविद्यालय

❖ **रेड्डी सी.ए. (2004) :** ''इफेक्ट ऑफ फिजिकल एजुकेशन ऑन डीफ एण्ड डम्ब स्टूडेन्ट'' पी.एच.डी. स्तर हेतु, जीवाजी यूनिवर्सिटी, मध्यप्रदेश

❖ **जैन प्रगति (2005) :** ''गरीब और मलिन बस्तियों का भारत में आर्थिक परिदृश्य बदलने का प्रभाव'' एम.एड. स्तर हेतु, बीकानेर विश्वविद्यालय, राजस्थान

❖ **सिंह रवीन्द्रनाथ (2006):** ''ए स्टडी ऑफ द एन्वायरमेन्टल अवेयरनेस टू स्कूल एजूकेशन'' पी.एच.डी.स्तर हेतु, उस्मानिया यूनिवर्सिटी

❖ **डॉ० विकास मोदी (2006) :** ''पर्यावरण बोध पर आर्थिक स्तर का प्रभाव।'' पी. एच.डी. स्तर हेतु, जोधपुर विश्वविद्यालय (राज.)

❖ **भण्डारी श्रुति, चैनपट्टी बालकृष्णन स्यूथम (2008) :** ''एनस्योरिंग, क्लीनलीनेस इन स्लम्स चैन्नई''

❖ **भाटी कँवर मधु (2009–10) :** ''विभिन्न विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों का स्वास्थ्य शिक्षा के प्रति ज्ञान एवं अभिवृत्ति का अध्ययन''एम.एड. हेतु, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

❖ **अपूर्वा शकुन्तला (2009–10) :** कच्ची–बस्ती के बालकों की शारीरिक स्वच्छता का अध्ययन''एम.एड. हेतु, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

❖ **चौधरी रेखा (2010–2011) :** ''माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन'' एम.एड. हेतु, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

❖ **नेशनल सर्वे रिलेटेड टू क्लीनिंग इन स्कूल** (भारत सरकार स्वच्छता एवं जल मंत्रालय द्वारा) (2012)

❖ **एडवर्ड जे एण्ड केथलिन (2000) :** ''एन्वायरमेन्टल स्टडीज इन द 12 क्लास रूम्सय ए टीचर व्यूज''

❖ **अथेनसीया (2005) :** ''नेशनल पॉलिसी लोकल अवेयरनेस इम्पलीमेन्टिंग एन्वायरमेन्टल'', ''एजूकेशन इन द प्राइमरी स्कूल ऑफ उत्तरी ग्रीस''

❖ **मेरी काराइल, पेज एन्डूज, कोपेन हेगन (2009) :** ''डी बीफिंग एन एनालाइसिस ऑफ कॉप–15 फॉर लॉग टू कॉरपोरेशन''

❖ **विजनस वायर, डेनमार्क (2010) :** ''इंडियाज स्लमस रिप्रजेन्ट कॉम्पलेक्स पॉलिटिकल एण्ड सॉशियल इशूज अकोर्डिंग टू स्टेन फोर्ड बिजनस स्कूल रिसर्च''

पत्र एवं पत्रिकाएँ

- **मैथ्यू जॉन (2009)** : हाइजीन इन रेफरेन्स टू इण्डिया, केरल, न्यू रिसर्च मैथड.
- **राजस्थान पत्रिका (3 अक्टूबर, 2014)** : स्वच्छ भारत अभियान एक परिचय.
- **जैन महेन्द्र (2015)** : स्वच्छ भारत अभियान संक्षिप्त जानकारी दर्पण. आगरा, उपकार प्रकाशन.

Webliography

- www.cleaniness.com
- www.government.india.in
- www.wikipedia.com
- www.swacchbharat.com
- www.cleanindiagreenindia.in
- www.shodgangotri.com

परिशिष्ट

स्वच्छ भारत अभियान के प्रति शिक्षक अभिवृति मापनी

निर्देशक | निर्माणकर्त्री

प्रोफेसर – डॉ. बी.एल. जैन | अनिता कुमारी

(एम.एड. छात्रा)

आयु .....

नाम..... लिंग : पुरूष ☐

स्त्री ☐

पद तथा संस्था का नाम .....

निर्देश :–

1. इस प्रश्नावली के माध्यम से शिक्षकों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृति का अध्ययन किया जा रहा है।
2. प्रत्येक कथन के आगे दो कॉलम दिये गये है। प्रश्नों को पढ़कर उन्हीं के अनुसार दिये गये कॉलम में निशान लगाये।
3. आप निश्चित होकर उत्तर दे। आपके उत्तर गोपनीय रखे जायेंगे।

कथनः–	प्रतिक्रिया	
	हॉ	नहीं
1. आप स्वच्छता अभियान से जुड़कर गर्व महसूस करते हों।	☐	☐
2. एक शिक्षक होने के नाते ये मेरी जिम्मेदारी है कि मैं स्वच्छ भारत अभियान का भार अपन कंधो पर उठा रहे हो।	☐	☐
3. राह चलते राहगीरों को कचरा या पॉलिथिन सड़क पर डालने पर आप उन्हें टोकते है।	☐	☐
4. आपके विद्यालय में स्वच्द जल की व्यवस्था नहीं है। इसकी शिकायत आप उच्च अधिकारी से करेंगे।	☐	☐
5. स्वच्छता रखना प्रत्येक देशवासी का नैतिक कर्तव्य है।	☐	☐

6. छात्रों द्वारा विद्यालय तथा परिवेश की साफ–सफाई करवाना उचित है।

7. आप पर्यावरणीय जागरूकता संबंधी कार्यक्रमों में भाग लेते है।

8. आप अपने विद्यार्थियों को विद्यालय से बाहर भी स्वच्छता रखने को कहते हो।

9. आपके विद्यालय में बालकों को दिये जा रहे पोषाहार में स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा जाता है।

10. आप छात्रों को शारीरिक स्वच्छता का महत्व बताने में कठिनाई अनुभव करते है।

11. आप अपने छात्रों विद्यालयी ज्ञान के अतिरिक्त स्वच्छता से संबंधित बातों की जानकारी भी देते है।

12. अपने आस–पास के परिवेश में पड़ी गंदगी देखकर आपकों बैचेनी होने लगती है।

13. आप इन्टरनेट, समाचार–पत्र, टेलीविजन पर आने वाल स्वच्छ से त कार्यक्रमों को रूचि से देखते है।

14. आप स्वच्छ भारत अभियान से निरन्तर जुड़ा रहना चाहते है।

15. आपने विद्यालय की स्वच्छता रखने में कमी आर्थिक सहायता प्रदान की है।

16. आप किसी भी समारोह में चाय–नाश्ते के बाद कप–प्लेट को इधर–उधर फेंक देते हो।

17. स्वच्छता अपनाने से व्यक्ति रोग मुक्त रहता है।

18. स्वच्छता शपथ से प्रतिबद्ध होकर आप भी प्रत्येक सप्ताह 2 घण्टे अपने विद्यालय में सफाई करते हो।

19. स्वच्छता अभियान से भारत की एक स्वच्छ अनुपम छवि जुड़ी है।

20. यदि बालकों को स्वच्छता प्राथमिक स्तर से अपनाने को बाध्य किया जाये तो वे एक स्वच्छ राष्ट्र के निर्माण में मुख्य भूमिका निभायेंगे।

21. स्वच्छता अभियान को आप गम्भीरता से लेते हो।

22. आप स्वयं तथा दूसरो को स्वच्छता रखने के लिए प्रतिबद्ध करते है।

23. आप अपने विद्यालय में स्वच्छता पर विशेष बल देते हो। ☐ ☐

24. स्वच्छता अभियान के कारण सरकारी सम्पतियों का हालत में सुधार हुआ है। ☐ ☐

25. स्वच्छता अभियान सरकारी तंत्र द्वारा जबरदस्ती कर्मचारियों पर थोपा गया एक बोझ है। ☐ ☐

26. स्वच्छता अभियान समय एवं परिश्रम की बर्बादी है। ☐ ☐

27. स्वच्छता रखना व्यक्तिगत नहीं सामाजिक कर्तव्य है। ☐ ☐

28. आप अपने घर भी सफाई में योगदान देते है। ☐ ☐

29. साफ–सफाई करने से आपकों थकान व आलस्य अधिक होता है। ☐ ☐

30. आप बस में कचरा फेकते है। ☐ ☐

31. आप सप्ताह में दो घण्टे स्वच्छ भारत अभियान के तहत सफाई करते है। ☐ ☐

32. सार्वजनिक स्थानों पर धूमपान प्रतिबंधित होना चाहिए। ☐ ☐

33. आप सड़क पर थुकना अच्छा लगता है। ☐ ☐

34. आपके आस–पास के व्यक्ति स्वच्छ भारत अभियान में योगदान दे रहे है। ☐ ☐

35. स्वच्छ भारत अभियान सामाजिक विकास में कोई योगदान नहीं देता है। ☐ ☐

36. स्वच्छ भारत अभियान में भारत स्वच्छ नहीं होगा। ☐ ☐

37. आप अपने आस–पास साफ सफाई पसंद करते है। ☐ ☐

38. प्रत्येक वर्ष 1 से 7 अक्टूम्बर तक वन सप्ताह नहीं मनाया जाता है। ☐ ☐

39. पवन ऊर्जा का उपयोग प्रदूषण बढ़ाता है। ☐ ☐

40. स्वच्छ भारत अभियान से भारत की छवि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। ☐ ☐

41. स्वच्छ अभियान से आपको स्वच्छता में कोई बदलाव नजर नहीं आता है। ☐ ☐

42. स्वच्छ भारत अभियान में देश में पूर्ण स्वच्छता में पर जोर नहीं दिया गया। ☐ ☐

43. आप अपने आस–पास के लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूक करते है।

☐ ☐

44. स्वच्छ भारत अभियान में युवाओं की भागीदारी नहीं होनी चाहिए। ☐ ☐

45. आपको लगता है कि 2019 तक हम स्वच्छ भारत बना पायेंगे। ☐ ☐

46. आप अपने पर्यावरण को शुद्ध रखने के लिए पेड़ लगाये है। ☐ ☐

47. आप विद्यालय में स्वच्छ भारत अभियान कैम्प का आयोजन किया है।

☐ ☐

48. आप छात्रों को शारीरिक स्वच्छता का महत्व बताने में कठिनाई अनुभव करते है।

☐ ☐

49. आप अपनी साथी शिक्षकगणों को विद्यालयी स्वच्छता हेतु अपना योगदान प्रदान करने को कहते है। ☐ ☐

50. स्वच्छ भारत अभियान के तहत मैं चाहूँगा कि मुझे तथा मेरे विद्यालय को सर्वोत्तम स्वच्छता रखने वाले संस्थान का पुरस्कार मिले। ☐ ☐